



श्री
सर्वोच्च अदालत
मुद्दा तथा रिट महाशाखा
(रिट क)

महाशाखा प्रमुख (फोन नं:) ०१-४२६२४९०
फ्याक्स: ०१-४२६२८७८,
४२६२३९८, ४२६२३९७, ४२६२८९५
Email:mudda.mahasakha@supremecourt.gov.np

च. नं: ८७५७

मिति:- २०७९-०५-२६

मुद्दा नं- ०७८-WO-००५६

बिषय:- फैसलाको प्रमाणित प्रतिलिपी पठाएको सम्बन्धमा ।

श्री निजामती कर्मचारी अस्पताल, काठमान्डौ ।

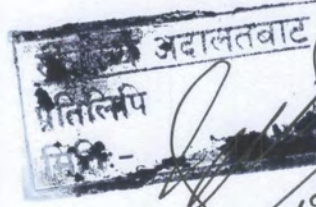
पुनरावेदक/निवेदक रवि प्रकाश शर्मा समेत र प्रत्यार्थी/विपक्षी प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रीपरिषदको कार्यालय सिंहदरवार काठमान्डौ समेत भएको उत्प्रेषण मुद्दामा तहाको च.न.२६० मिति २०७९।५।२६ को पत्र माग बमोजिमको मिति २०७९-०५-२६ मा भएको आदेशको प्रतिलिपी यसैसाथ पठाईएको व्यहोरा अनुरोध छ ।

कुलबहादुर खत्री

रिट ७

बिमल पौडेल

महाशाखा प्रमुख



००६/४१९६

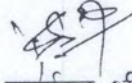
सर्वोच्च अदालत, संयुक्त इजलास
सम्माननीय का.मु. प्रधान न्यायाधीश श्री दीपककुमार कार्की
माननीय न्यायाधीश डा. श्री कुमार चुडाल
आदेश

०७८-WO-००५६

मुद्दा : उत्प्रेषण परमादेशसमेत।

- जिल्ला, सिदार्थनगर न.पा. वडा नं ८ स्थायी वतन भएको मिति २०६७।१२।१३ मा निजामती कर्मचारी अस्पतालमा कन्सल्टयान्ट पदमा कार्यरत डा. रवि प्रकाश शर्मा..... १
- ऐ. ऐ. का कन्सल्टयान्ट पदमा कार्यरत डा. सुधा सुवाल (वासुकला)..... १
- ऐ. ऐ. का कन्सल्टयान्ट पदमा कार्यरत डा. निरशोभा चित्रकार..... १
- ऐ. ऐ. का (कार्डियोलोजी) पदमा कार्यरत डा. कमल शर्मा लम्साल..... १
- ऐ. ऐ. का स्पेसलिष्ट (न्युरोलोजी) पदमा कार्यरत डा. निरञ्जन आचार्य..... १
- ऐ. ऐ. का स्पेसलिष्ट (जनरल सर्जरी) पदमा कार्यरत डा. विकलचन्द्र शाक्य..... १
- ऐ. ऐ. का स्पेसलिष्ट (अर्थोपेडिक सर्जरी) पदमा कार्यरत डा. परिमल आचार्य..... १
- ऐ. ऐ. का स्पेसलिष्ट (क्लिनिकल हेमाटोलोजी) पदमा कार्यरत डा. विशेष शर्मा पौड्याल..... १
- ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (फ्यामिलि मेडिसिन) पदमा मिति २०७१।०३।०१ देखि स्पेसलिष्ट पदमा निवेदक कार्यरत डा. दिनेश कुमार लम्साल..... १
- ऐ. ऐ. का अस्पतालमा रजिष्ट्रार (जनरल सर्जरी) पदमा स्पे मिति २०७१।०३।०१ देखि स्पेसलिष्ट पदमा कार्यरत डा. अनिरराम मोह श्रेष्ठ..... १
- ऐ. ऐ. का स्पेसलिष्ट (गाइने एण्ड अब्स) पदमा कार्यरत डा. जितेन्द्र परियार..... १
- ऐ. ऐ. का सिनियर रजिष्ट्रार (स्पेसलिष्ट) इ. मेडिसिन पदमा कार्यरत डा. प्रदिप श्रेष्ठ..... १
- ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (इन्टरनल मेडिसिन) पदमा कार्यरत डा. थुप्तेन केलसाड लामा..... १
- ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (रेडिएशन अन्कोलोजी) पदमा कार्यरत डा. सिमित सापकोटा..... १
- ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (पेडियाट्रिक्स) पदमा कार्यरत डा. शान्ती शर्मा..... १
- ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (पेडियाट्रिक्स) पदमा कार्यरत डा. अरुणा बिजुकछे..... १
- ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (पेडियाट्रिक्स) पदमा कार्यरत डा. प्रकाश ज्योति पोखरेल..... १

ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (अर्थोपेडिक सर्जरी) पदमा कार्यरत डा. बन्धुराम पंगेनी.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (अर्थोपेडिक सर्जरी) पदमा कार्यरत डा. अरुण सिग्देल.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (फ्यामिली मेडिसिन) पदमा कार्यरत डा. रमेश पन्त.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (अब्स्ट्रे एण्ड गाइने) पदमा कार्यरत डा. अरुणप्रसाद जोशी.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (अब्स्ट्रे एण्ड गाइने) पदमा कार्यरत डा. ईशा श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (अब्स्ट्रे एण्ड गाइने) पदमा कार्यरत डा. रीमा महर्जन.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (अब्स्ट्रे एण्ड गाइने) पदमा कार्यरत डा. पवित्र महर्जन.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (जनरल सर्जरी) पदमा कार्यरत डा. विक्रम व्यञ्जनकार.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (जनरल सर्जरी) पदमा कार्यरत डा. रविन पण्डित.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (प्याथोलोजी) पदमा कार्यरत डा. समीर न्यौपाने.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (प्याथोलोजी) पदमा कार्यरत डा. सम्पूर्ण तुलाधर.....	१ निवेदक
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (अटोरिनोल्यारिङ्गोलोजी) पदमा कार्यरत डा. दिपेश शाक्य.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (डर्माटोलोजी) पदमा कार्यरत डा. सुशील पौडेल.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (रेडियोलोजी) पदमा कार्यरत डा. राजबाबु ब्यन्जनकार.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (रेडियोलोजी) पदमा कार्यरत डा. रविन्द्र देशार.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (इन्टरनल मेडिसिन) पदमा कार्यरत डा. निरज कर्माचार्य.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (रेडिएसन अन्कोलोजी) पदमा कार्यरत डा. सुभाष पण्डित.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (इ. मेडिसिन) पदमा कार्यरत डा. दिपक पौडेल.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (प्याथोलोजी) पदमा कार्यरत डा. सृजना कोइराला.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (डर्माटोलोजी) पदमा कार्यरत डा. रविन्द्र प्रसाद शर्मा.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (एनेस्थेसियोलोजी) पदमा कार्यरत डा. प्रशान्त पौडेल.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (रेडियोलोजी) पदमा कार्यरत डा. योगेन्द्र विष्ट.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (इ. मेडिसिन) पदमा कार्यरत श्री जेनर कुरुम्वाङ्ग.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (एनेस्थेसियोलोजी) पदमा कार्यरत डा. सुभाष चन्द्र पौडेल.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (एनेस्थेसियोलोजी) पदमा कार्यरत डा. बिदुर कुमार ढुंगेल.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (फ्यामिली मेडिसिन) पदमा कार्यरत डा. राजिव शंखदेव.....	१
ऐ. ऐ. का प्रशासकीय अधिकृत पदमा कार्यरत श्री रञ्जना नेपाल.....	१
ऐ. ऐ. का फिजियोथेरापिष्ट पदमा कार्यरत श्री बिमल प्रजापती.....	१
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफि टेक्नोलोजिष्ट पदमा कार्यरत श्री महेश्वरी श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का प्रशासन सहायक पदमा कार्यरत श्री कञ्चन गिरी.....	१



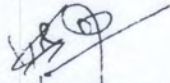
ऐ. ऐ. का मेडिकल रेकॉर्ड सहायक पदमा कार्यरत श्री सुदिपचन्द्र दाहाल.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन सहायक पदमा कार्यरत श्री सुदन पोखेल.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री विष्णु प्रसाद पोखरेल.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री दामोदर थपलिया.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री पिपला लामिछाने.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री संगिता धिमाल.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री अर्जुनप्रसाद बस्याल.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री सुशिल वराल.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री कमला शर्मा.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा करार नियुक्त भई कार्यरत श्री राधा पाण्डे.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री जमुना साउद.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री दर्शनकाजी श्रेष्ठ.....	१	
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा कार्यरत श्री रेखा अर्याल.....	१	
ऐ. ऐ. का लेखा उपसहायक पदमा कार्यरत श्री वावुराम आचार्य.....	१	निवेदक
ऐ. ऐ. का लेखा उपसहायक पदमा कार्यरत श्री मुकुन्द पौडेल.....	१	
ऐ. ऐ. का लेखा उपसहायक पदमा कार्यरत श्री सुनिता गिरी.....	१	
ऐ. ऐ. का लेखा उपसहायक पदमा कार्यरत श्री जानुका राई.....	१	
ऐ. ऐ. का लेखा उपसहायक पदमा कार्यरत श्री तिलक खड्का.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री प्रतिभा पन्त.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री सन्तोष श्रेष्ठ.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री शोभा बजगाई.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री प्रवल थापा.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री सुजन कार्की.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री जानुका रिजाल.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री लक्ष्मीता राई.....	१	
ऐ. ऐ. का रेडियोग्राफर पदमा कार्यरत श्री कविना धुकुछु.....	१	
ऐ. ऐ. का फार्मैसी सहायक पदमा कार्यरत श्री प्रकाश खत्री.....	१	
ऐ. ऐ. का फार्मैसी सहायक पदमा कार्यरत श्री सन्दिप तिवारी.....	१	
ऐ. ऐ. का फार्मैसी सहायक पदमा कार्यरत श्री दिपक सापकोटा.....	१	
ऐ. ऐ. का फार्मैसी सहायक पदमा कार्यरत श्री सिर्जना ज्वाली.....	१	



ऐ. ऐ. का फार्मैसी सहायक पदमा कार्यरत श्री महादिप श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री रोशन प्याथ.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री एलिजा बस्नेत.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री गोमिक सिद्धि शिल्पकार.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री दिपक चन्द.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री मनराज चौधरी.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री उत्तम बुढाथोकी.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री विनु तमी.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री हेमराज भण्डारी.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री रेखा कुमारी बि.सी.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री प्रशान्त कार्की.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री अजित थापा.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री श्रीजन श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री राम विनय साह.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री सुरेश प्रजापति.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री रजनी व्यान्जु.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री विक्रम श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री मनिशा ओझा.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री सुजित महर्जन.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री मिजला महर्जन.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री समिर श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का ल्याव टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री सजना तण्डुकार.....	१
ऐ. ऐ. का बायोमेडिकल टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री सञ्जीव कुमार सिंह.....	१
ऐ. ऐ. का कम्प्युटर टेक्निसियन पदमा कार्यरत श्री नविन विक्रम साह.....	१
ऐ. ऐ. का इलेक्ट्रिकल ओवरसियर पदमा कार्यरत श्री सरोज कुमार साह.....	१
ऐ. ऐ. का फिजियोथेरापी सहायक पदमा कार्यरत श्री सचिता रायमाझी.....	१
ऐ. ऐ. का फिजियोथेरापी सहायक पदमा कार्यरत श्री चन्द्रदीपकुमार महतो.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री मनिता शर्मा.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री रिता कार्की.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री इन्दु पौडेल.....	१

निवेदक

ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री निर्मला शर्मा.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री युरिसा कटवाल.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री झुमा चुडाल.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री शान्ति खड्का.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री लक्ष्मी पराजुली.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री भेषवहादुर वस्नेत.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री सुदर्शन ढकाल.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री कृष्ण अधिकारी.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री मन्दिरा गौतम.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री बन्दना दुङ्गेल.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री विपुला घिमिरे.....	१ निवेदक
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री कल्पना तिमिसिना गौतम.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री संजयकुमार यादव.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री नर्वदा कुमारी कोइराला.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री वागेश्वरी जिरेल.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री कविता कुमारी.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री रमेश विक.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री सुमित्रा विडारी.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री मोनिका मैनाली.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि. सहायक पदमा कार्यरत श्री कल्पना घर्ती.....	१
ऐ. ऐ. का डेन्टल हाइजिनिष्ट पदमा कार्यरत श्री मन्दिरा पोखरेल.....	१
ऐ. ऐ. का डेन्टल हाइजिनिष्ट पदमा कार्यरत श्री हिमाली थापा मगर.....	१
ऐ. ऐ. का प्लम्बर पदमा कार्यरत श्री राम कुमार अधिकारी.....	१
ऐ. ऐ. का प्लम्बर पदमा कार्यरत श्री गोपाल प्रसाद भुसाल.....	१
ऐ. ऐ. का सवारी चालक पदमा कार्यरत श्री अर्जुन कुमार पहाडी.....	१
ऐ. ऐ. का सवारी चालक पदमा कार्यरत श्री विनोद तिमलिसिना.....	१
ऐ. ऐ. का सवारी चालक पदमा कार्यरत श्री रामहरी श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री करिष्मा खड्का.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री रेणु योजन.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सृजना संगौला (वस्नेत).....	१




ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री गोमा कुमारी भुसाल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री प्रियंका मारिता.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री प्रभा कोइराला.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री प्रास्ना क्षेत्री.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री एलिसा कायस्थ.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री जेनी भट्टराई.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री राधिका भुजूर).....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री भगवती खनाल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री दीपा खड्गी.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री वर्षा खालिङ्ग राई.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सोना महर्जन.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सुजया पोखरेल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री लक्ष्मी कुमारी जैसवाल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री निर्मला महर्जन.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सृजना उप्रेती.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री प्रतिमा श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री निर्मला श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सस्मिता मैनाली.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री दिन्चु श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री गंगा कार्की.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री श्रीना श्रेष्ठ.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री रिजा अमात्य.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री शशीकला यादव.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री रुपा दानी.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री जाड्नु शेर्पा.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री विनिता दाहाल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सरिता गिरी.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री प्रजा तुईतुई.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री अनिता बिशुन्के.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री शुस्मिता शर्मा.....	१

निवेदक

ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री पुजा गरुड़ १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री सृजना कार्की १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री भूमिका बास्तोला १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री आरति यादव १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री कविता तिमलिसना १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री शान्तामाया श्रेष्ठ १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री संजीना मिश्र क्षेत्री १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री सुशमा हुमागाई १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री मनकामना कार्की १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री स्नेहा भडेल १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री मेघना बज्राचार्य १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री प्रतिमा श्रेष्ठ १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री रुषा धेके १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री लक्ष्मी रिजाल १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री सन्तोषी लामिछाने १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री ज्वाला ढकाल १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री पुजा क्षेत्री १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री प्रमिला मिश्र १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री सोफिया सुवेदी १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री शर्मिला आछामी मगर १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री सम्झना अर्याल १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री सुष्मिता गोदार १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री अस्मिता बराल १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री जमुना गौतम १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री आश्विनी श्रेष्ठ १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री शोभा चौधरी १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री समिक्षा भट्टराई १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री अनिसा बसौला १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री छबिकला श्रेष्ठ १
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा	कार्यरत श्री रीना सुवाल १

निवेदक



ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री छिरिड डोल्मा लामा.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री प्रिती झा.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री बेबी रौनियार.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री अम्बिका चौलागाई.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सुनयना कार्की.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री करिस्मा धौलाकोटी.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री जुनिता महाजु.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री मनिसा कार्की.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री ममता पाण्डे.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री शशी कर्मचार्य.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री स्मिता धेके.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री अस्मिता गुरुड.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री शशी खाइजु.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री बसु कठेत.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री रोशनी महर्जन.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री सुलोचना बास्तोला.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री रुवी साह.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री मनिषा डंगोल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री रञ्जना ढकाल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री अञ्जली बिश्वकर्मा.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री अस्मिता सापकोटा.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री रञ्जु कुमारी यादव.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री नितिशा रायमाझी.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री शिताम्मा योजन.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री ममता कट्टेल.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत श्री उषा साँद.....	१

निवेदक

विरुद्ध

नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरवार काठमाण्डौ.....	१
श्री सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय सिंहदरवार काठमाण्डौ.....	१



श्री स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय, रामशाहपथ काठमाण्डौ.....	१
श्री कानून, न्याय तथा संसदीय मामिला मन्त्रालय, सिंहदरवार काठमाण्डौ.....	१
श्री अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरवार काठमाण्डौ.....	१
श्री लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालय, अनामनगर काठमाण्डौ.....	१
श्री निजामती कर्मचारी अस्पताल, मिनभवन काठमाण्डौ.....	१
ऐ. को विकास समिति, मिनभवन काठमाण्डौ.....	१
ऐ. को पदपूर्ति समिति, मिनभवन काठमाण्डौ.....	१

विपक्षी

०७८-WO-०४१७

काठमाडौं जिल्ला, का.म.न.पा. वडा नं. १५ बस्ने मिति २०७१।२।१६ मा निजामती कर्मचारी अस्पतालमा रजिष्ट्रार (अर्थोपेडिक सर्जन) पदमा करार नियुक्त भई कार्यरत डा. सुमनबाबु मरहट्टा.....	१
ऐ. ऐ. का रजिष्ट्रार (फ्यामिली मेडिसिन) पदमा कार्यरत डा. दीपेश के.सी.....	१
ऐ. ऐ. का प्रशासन उपसहायक पदमा विश्वेश्वर कोइराला.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत रञ्जु कुमारी चौधरी.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत जया गौतम.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत उषा घिमिरे.....	१
ऐ. ऐ. का स्टाफ नर्स पदमा कार्यरत शषिका राई.....	१
ऐ. ऐ. का ओ.पि.डि सहायक पदमा कार्यरत सोमा तामाङ्ग.....	१

निवेदक

विरुद्ध

नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरवार.....	१
संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय, सिंहदरवार.....	१
स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय, काठमाडौं.....	१
कानून, न्याय तथा संसदीय मामिला मन्त्रालय, सिंहदरवार.....	१
अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरवार.....	१
लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालय, अनामनगर, काठमाडौं.....	१
निजामती कर्मचारी अस्पताल, मिनभवन, काठमाडौं.....	१
ऐ. को विकास समिति, मिनभवन, काठमाडौं.....	१
ऐ. को पदपूर्ति समिति, मिनभवन, काठमाडौं.....	१

विपक्षी

नेपालको संविधानको धारा ४६ र १३३(२) बमोजिम यसै अदालतको क्षेत्राधिकार भित्र पर्ने भई पेश हुन आएको प्रस्तुत रिट निवेदनको संक्षिप्त तथ्य एवं ठहर यसप्रकार रहेको छ।

तथ्य खण्ड

१. निजामती कर्मचारी अस्पताल, मिनभवन काठमाण्डौ निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ को व्यवस्था बमोजिम संचालनमा रहेको अस्पताल हो। गठन आदेशको व्यवस्था बमोजिम निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिबाट अस्पताल संचालन हुँदै आईरहेको छ। गठन आदेशले दिएको अधिकार बमोजिम अस्पताल विकास समितिले सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको स्वीकृतिमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरुको सेवाको शर्त तथा सुविधा) विनियमावली, २०७० (यस पश्चात कर्मचारी विनियमावली भनिनेछ) बनाई लागु गरेको छ। हामी निवेदकहरु कर्मचारी विनियमावलीको व्यवस्था बमोजिम विभिन्न मितिमा विभिन्न तह तथा पदमा नियुक्त भई कार्यरत रहेका कर्मचारीहरु हौं। कर्मचारी विनियमावलीको मुल विनियम १४, १५, १६, १७, १८ समेतले पदपुर्तिका लागि निजामती कर्मचारी अस्पताल पदपुर्ति समितिले (यस पश्चात पदपुर्ति समिति भनिनेछ) पदसंख्या निर्धारण गरि विज्ञापन गर्ने व्यवस्था गरे बमोजिम विपक्षी पदपुर्ति समितिले विपक्षी श्री लोकसेवा आयोग समेतको समन्वयमा पटक पटक विज्ञापन जारी गरेको थियो। हामी निवेदकहरु सो बमोजिम विभिन्न मितिमा संचालन भएका खुल्ला प्रतियोगितात्मक परीक्षामा सहभागी भई खुल्ला प्रतिस्पर्धाबाट विभिन्न पद र तहमा छनौट भई कर्मचारी विनियमावलीको मुल विनियम २८ र २९ को व्यवस्था बमोजिम करारमा शुरु नियुक्त भएका कर्मचारीहरु हौं।
२. २०७० को कर्मचारी विनियमावलीमा अस्पतालमा आवश्यक प्रशासन सेवा र प्राविधिक सेवामा पदपुर्तिका लागि पदपुर्ति समितिले पदसंख्या निर्धारण गरि खुल्ला प्रतियोगितात्मक परीक्षाबाट करारमा शुरु नियुक्त गर्ने, आन्तरिक परीक्षाबाट स्थायी नियुक्त गर्ने र प्रतियोगिता र कार्यक्षमताको मुल्याङ्कनका आधारमा बढुवा गर्ने व्यवस्था गरिएको थियो। कर्मचारी विनियमावलीको विनियम २९ ले खुल्ला प्रतियोगिताबाट शुरु नियुक्तिका लागि सिफारिस

भएका उम्मेदवारलाई करारमा नियुक्त गर्ने व्यवस्था गरि ऐ. को विनियम ३१ मा यसरी करारमा शुरु नियुक्त भई चार वर्ष सेवा अवधि पुरा गरेका कर्मचारीको लागि पदपुर्ति समितिले लिखित तथा अन्तर्वाता परीक्षा संचालन गरि उतीर्ण उम्मेदवारलाई स्थायी नियुक्ति गर्ने व्यवस्था गरिएको थियो। ऐ. को विनियम ३१ मा करारमा शुरु नियुक्त भई चार वर्ष करार सेवा अवधि पुरा गरेका प्रत्येक कर्मचारीको जम्मा सेवा अवधि पाँच वर्ष पुरा हुनु भन्दा अघि परीक्षामा सम्मिलित हुने अवसर प्राप्त हुने गरि परीक्षा संचालन गर्नु पर्ने व्यवस्था समेत गरेको थियो। उल्लेखित व्यवस्थाहरूका कारण अस्पतालको प्रशासन तथा प्राविधिक सेवामा प्रवेश गर्न चाहने उम्मेदवारहरूको लागि पदपुर्ति समितिले जारी गरेको विज्ञापन बमोजिम खुल्ला प्रतियोगितात्मक परीक्षामा सम्मिलित भई शुरुमा करारमा नियुक्ती लिई चार वर्ष करार सेवा अवधि पुरा गरि आन्तरिक परीक्षाबाट स्थायी नियुक्त हुने एकमात्र विकल्प रहेको थियो। संसोधन पूर्व खुल्ला प्रतिस्पर्धाबाट स्थायी कर्मचारीको पदपुर्ती गर्ने व्यवस्था गरिएको थिएन। अस्पताल विकास समितिले मिति २०७७।१०।१८ मा कर्मचारी विनियमावलीको पदपुर्ति सम्बन्धी व्यवस्थामा संसोधन गर्दै निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाको शर्त र सुविधा) (दोस्रो संसोधन) विनियमावली, २०७७ (यसपश्चात संसोधित विनियमावली भनिनेछ) बनाई लागु गरेको रहेछ। उक्त संसोधित विनियमावली सार्वजनिक नगरिएका कारण तत्कालै त्यस बारेमा जानकारी प्राप्त हुन सकेन। यसरी अस्पतालको प्रचलित कानून र विनियमावली बमोजिम २०६५ साल देखि २०७६ साल सम्म पटक पटक गरि हालसम्म प्रशासन तथा प्राविधिक तर्फ गरि जम्मा २३६ भन्दा वढी कर्मचारीहरूलाई करारमा शुरु नियुक्ति गरिएको छ। यसरी करारमा शुरु नियुक्त भएका कर्मचारीहरूको सेवा अवधि ५ वर्ष नपुग्दै कर्मचारी विनियमावलीको विनियम ३१ बमोजिम स्थायी नियुक्ति गर्ने प्रयोजनका लागि आन्तरिक परीक्षा संचालन गर्नु पर्नेमा हालसम्म एक (१) पटक मात्र परीक्षा संचालन गरि मिति २०७३।०२।०९ मा जम्मा ४५ जना कर्मचारीहरूलाई मात्र स्थायी नियुक्त गरिएको छ। अस्पतालको प्रचलित कानून बमोजिम करारमा शुरु नियुक्ति पाएका अन्य कर्मचारीहरूको हकमा बदनियतपूर्वक हालसम्म कुनै परीक्षा संचालन गरिएको छैन, करारको अवधि मात्र नविकरण गर्दै आइएको छ।

३. अस्पताल विकास समितिले मिति २०७७।१०।१८ को निर्णयबाट लागु गरेको निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरुको सेवाको शर्त र सुविधा) (दोस्रो संसोधन) विनियमावली, २०७७ ले कर्मचारीको नियुक्ति प्रकृया र सेवाका शर्तहरुमा विविध परिमार्जन गर्दै संसोधित विनियमावलीको विनियम २८ को व्यवस्थाले विनियमावलीको नियम १६, २९, ३१ र १२५ को व्यवस्था पुर्ण रूपमा खारेज गरेको रहेछ। उक्त संसोधन र खारेजीले खुल्ला प्रतियोगितात्मक परिक्षाबाट करारमा शुरू नियुक्ति गरि आन्तरिक परिक्षाबाट स्थायी नियुक्ति गर्ने व्यवस्था हटाई रिक्त पदमा खुल्ला प्रतियोगितात्मक परिक्षाबाट सोझै स्थायी नियुक्ति गर्ने व्यवस्था गरेको रहेछ। उक्त संसोधित विनियमावलीमा करारमा शुरू नियुक्ति पाई वर्षौंसम्म सेवा प्रदान गरिरहेका र विनियमावलीको मुल व्यवस्था बमोजिम हालसम्म स्थायी नियुक्तिका लागि अवसर प्राप्त नगरेका कर्मचारीहरुको स्थायी नियुक्तिका लागि कुनै व्यवस्था गरिएको छैन। यसको विपरित संसोधित विनियमावलीको विनियम २८ ले मूल विनियमावलीको विनियम १२५ मा उल्लेखित बचाउको व्यवस्थालाई समेत खारेज गरेकाले स्थायी नियुक्तिका लागि अवसर नै प्राप्त नगरेका हामी निवेदकहरुलाई स्थायी नियुक्तिको प्रकृयाबाट पुर्ण बन्देज लगाई अन्यौलता सृजना गरेको छ। यसरी हामी निवेदकहरुलाई स्थायी नियुक्तिको अवसरनै प्रदान नगरि बदनियतपुर्ण रूपमा हाम्रो पेशा रोजगार सम्बन्धी मौलिक हकमा आघात पर्ने गरि कानुन संसोधन गर्ने र विनियमावलीको मुल व्यवस्था बमोजिम सृजित हाम्रो हक तथा अस्तित्वलाई भुतलक्षी नियम लागु गरि नष्ट गर्ने कार्य र सो सम्बन्धमा भएका सम्पुर्ण कामकारवाहीहरु प्रचलित कानुन, हामी निवेदक कर्मचारीहरुको नेपालको संविधानले प्रत्याभुत गरेको संवैधानिक हक, प्रचलित कानुनले प्रदान गरेको कानुनी हक अधिकार, श्री सर्वोच्च अदालतले प्रतिपादन गरेका नजिर सिद्धान्त र यस सम्बन्धमा स्थापित संवैधानिक मान्यता समेतको विपरित भई गैरकानुनी एवमं बदरभागी छ। हामी निवेदकको मौलिक हक अधिकारमा हनन हुने गरि प्रचलित कानुन विपरित विपक्षीबाट स्वीकृत भई लागु गरिएको संसोधित विनियमावलीको व्यवस्थाहरु र सो सम्बन्धमा भए गरेका सम्पुर्ण कामकारवाहीहरु उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरि हामी निवेदकहरुलाई स्थायी नियुक्तिको अवसर प्रदान गर्नु भनि परमादेश लगायत अन्य उपयुक्त आज्ञा आदेश जारी गरि पाउन अन्य उपचारको

अभावमा नेपालको संविधानको धारा १३३(२) र १३३(३) बमोजिम यो निवेदन गरेका छौं।

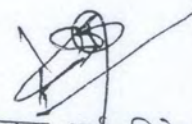
४. कर्मचारी विनियमावलीको मुल विनियम २९ बमोजिम करारमा शुरु नियुक्ती पाएका कर्मचारीहरुको कानुनी हैसियत सामान्यतया सार्वजनिक निकायमा करारमा नियुक्त गरिने अन्य कर्मचारी भन्दा भिन्न रहेको व्यहोरा विनियमावलीको व्यवस्थाहरुबाटै स्पष्ट छ। अस्पतालको सेवामा प्रवेश गर्ने एकमात्र विकल्पको रूपमा करारमा शुरु नियुक्त हुने व्यवस्था गरिएकोले समेतबाट यो व्यहोरा स्पष्ट हुन्छ। यसरी प्रचलित कानुन बमोजिम सेवा प्रवेश गरेका कर्मचारीहरुलाई विनियमावलीको मुल विनियम ३१ बमोजिम स्थायी हुने अवसर प्रदान नै नगरि विनियममा संसोधन गरि २०६५ साल देखी २०७६ सम्म नियुक्त कर्मचारीहरुलाई स्थायी नियुक्ति गर्ने व्यवस्था नै खारेज गर्नु र संसोधित विनियमावलीमा यस्ता कर्मचारीको हक हित तथा व्यवस्थापनका सम्बन्धमा कुनै व्यवस्था नगर्नुले विपक्षीले हामी निवेदकहरु प्रति राखेको पुर्वाग्रह, असमान व्यवहार र बदनियत स्पष्ट देखिन्छ। पहिलो करारमा शुरु नियुक्ति गरिएको कर्मचारीहरुको स्थायी नियुक्तिको प्रकृया नै अगाडी नबढाई पटक पटक गरि २०७६ साल सम्म पनि कर्मचारी विनियमावलीको विनियम २८ र २९ बमोजिम करारमा शुरु नियुक्ति गरिएको छ। २०७० सालसम्म नियुक्ति भएका कर्मचारीहरुको हकमा कर्मचारी विनियमावलीको विनियम ३१ बमोजिम ५ वर्ष भित्रै स्थायी नियुक्तिका लागि अवसर प्रदान गरिएको भए उक्त कर्मचारीहरु विनियमावलीको परिच्छेद ५ बमोजिम बढुवा भैसक्नुपर्ने अवस्था थियो। विपक्षीले बदनियत राखी समयमै परिक्षा संचालन नगरेकाले हामी हाल सम्म सो सुविधाबाट समेत बन्चित रहेका छौं। सोबाट समेत विपक्षीहरुको बदनियत स्पष्ट देखिन्छ। विपक्षीहरुको यस्तो बदनियतपूर्ण एवमं पुर्वाग्रही निर्णयका कारण हामी निवेदकहरुको भविष्य नै अन्योलमा परेको छ। विपक्षी अस्पतालको विनियमावलीको शर्त अनुरूप सेवामा प्रवेश गरेका केही निवेदकहरुको अन्य सरकारी सेवामा प्रवेश गर्नका लागि प्रचलित कानुन एवमं स्वयं संसोधित विनियमावलीमा निर्धारित उमेरको हद समेत समाप्त भैसकेको छ। साथै प्रचलित कानुन बमोजिम सेवा प्रवेश गरि स्थायी नियुक्ति र स्तरउन्नतीको वैध अपेक्षा (Legitimate Expectation) राखेका हामी निवेदकहरुको कानुनी हैसियत नै समाप्त

गर्ने गरि जारी गरिएको संसोधित विनियमावली लागु हुँदा हामी निवेदकहरुको मौलिक हक हनन भै अपुरणीय क्षति हुने अवस्था छ।

५. प्रत्यायोजित अधिकार अन्तर्गत विनियम बनाउने निकायले कुनै व्यक्तिले प्रचलित कानून बमोजिम प्राप्त गरिसकेको हक हितलाई अन्त्य गरि भुतलक्षित प्रभावको (Retrospective Effect) को कानून निर्माण गर्न सक्ने अवस्था रहदैन। एक पटक एउटा कानूनले स्थापित वा प्रत्याभुत गरेको अधिकारलाई त्यस्तै प्रकृतीको अर्को कानूनले खोस्न, न्युन गर्न वा हटाउन सक्दैन। यो कानूनको सर्वमान्य र स्थापित सिद्धान्त हो। Lord Diplock ले Council of Civil Service Unions v. Minister for the Civil Service (1985) को मुद्दामा कानून (Law) र अभ्यास (Practice) ले स्थापित नियम, मान्यता वा परम्परालाई निर्णयकर्ताले उलंघन गर्न नसक्ने र उलंघन भएमा त्यसको संरक्षण अदालतले गर्ने राय व्यक्त गरेका छन्। यस प्रकारको न्यायिक प्रचलन हाम्रो अदालती अभ्यासको समेत एक विशिष्ट विशेषता हो। नेपाल कानून व्याख्या सम्बन्धी ऐन, २०१० को दफा ४(ग) मा "कुनै नेपाल ऐनले पहिले बनेको ऐन खारेज गरेकोमा...खारेज भएको कुनै ऐन बमोजिम पाएको, हासिल गरेको, वा भोगेको कुनै हक, सुविधा कर्तव्य वा दायित्वमा असर पर्नेछैन" भनि व्यवस्था गरिएको छ। कर्मचारी विनियमावली तथा संसोधित विनियमावली निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ ले प्रत्यायोजन गरेको अधिकार बमोजिम अस्पताल विकास समितिले स्वीकृत गरि लागु गरिएको प्रत्योजित कानून हो। मूल कानूनले भुतलक्षित प्रभाव पार्ने गरि नियम वा विनियम बनाउने अधिकार प्रत्योजन नगरेकोमा प्रत्यायोजित अधिकार प्रयोग गर्ने निकायले निवेदकहरुले विनियमावलीको मुल व्यवस्था बमोजिम प्राप्त गरेको हक नष्ट गर्ने गरि जारी गरेको संसोधित विनियमावली आफैमा गैरकानूनी भै बदरभागी छ। नेपालको संविधान, २०७२ को धारा १८ मा समानताको हक प्रत्याभुत गरिएको छ। कानूनको दृष्टिमा समानता (Equality before Law) र कानूनको समान संरक्षण (Equal Protection of Law) समानताका दुई महत्वपूर्ण Facet हुन्। कानूनको समान संरक्षण (Equal Protection of Law) को अर्थ कुनै भिन्न र फरक अवस्थामा रहेका व्यक्तिहरुमा कुनै व्यवस्था समान वा एकरूपले लागु गर्दा सारभुत समानताको प्रत्याभुति हुन नसक्ने भएकाले असमान र कमजोर अवस्थामा रहेका व्यक्तिहरुका लागि विषेश कानूनी प्रबन्ध, कानूनी संरक्षण र व्यवहार अपरिहार्य हुन्छ भन्ने हो। कानूनको


समान संरक्षणको प्रत्याभुतीका लागि विशेष वर्गमा पर्ने व्यक्तिहरूका लागि विशेष व्यवस्था (Special treatment) गर्नु पर्ने हुन्छ। कानुनको व्यवस्था बमोजिम सेवा प्रवेशको पूर्व शर्तको रूपमा खुल्ला प्रतियोगिताबाट करारमा सेवा प्रवेश गरेका कर्मचारीहरूलाई अन्य समान्य करारमा नियुक्त कर्मचारी सरहको व्यवहार गरि जारी भएको संसोधित विनियमावली नेपालको संविधानको धारा १८ समेतको विपरित भै बदरभागी छ। ने.का.प. २०७१, अंक १०, नि.न.९२६० को डा. जैनुदिन अन्सारी विरुद्ध त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, काठमाडौंसमेत मुद्दामा "सार्वजनिक निकायबाट सम्पन्न गरिने काम र निर्णय प्रक्रिया उत्तरदायित्वपूर्ण होस्, निर्णय स्वेच्छाचारी नहोस् भन्ने उद्देश्यले वैध अपेक्षाको सिद्धान्त न्यायिक पुनरावलोकनको क्रममा अदालतहरूबाट प्रयोग हुँदै आएको पाइने।... वैध अपेक्षाको सिद्धान्त आकर्षित हुन सामान्यतया सार्वजनिक निकाय वा पदाधिकारीले प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपबाट कुनै काम गर्ने वा नगर्ने वचनबद्धता वा आश्वासन लिखित वा मौखिकरूपमा व्यक्त गरेको हुनुपर्दछ। त्यस्तो आश्वासन वा वचनबद्धताप्रति सार्वजनिक पदाधिकारी वा निकाय प्रतिबद्ध रहने छ भन्ने कुरामा सम्बन्धित पक्ष विश्वस्त भै सोबमोजिम कार्य गरेको हुनुपर्ने।" भनि व्याख्या गरिएको छ।

६. अतः माथि विभिन्न प्रकरणहरूमा वर्णन गरिएका कानुन, सिद्धान्त र तथ्यका आधारमा कानुन बमोजिम करार सेवामा शुरू नियुक्ति प्राप्त गरि कार्यरत रहेका हामी निवेदकहरूलाई कर्मचारी विनियमावली, २०७० को मुल विनियम ३१ बमोजिम स्थायी नियुक्तीको अवसर नै प्रदान नगरी करार सेवामा नियुक्त कर्मचारीहरूको कानुनी अस्तित्व नै समाप्त हुने गरि मिति २०७७।१०।१८ को निर्णयबाट जारी निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाको शर्त र सुविधा) (दोस्रो संसोधन) विनियमावली, २०७७ को व्यवस्था नेपालको संविधान, निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४, प्रचलित कानुन, सर्वोच्च अदालतले प्रतिपादन गरेका नजिर सिद्धान्त र यस सम्बन्धी स्थापित संवैधानिक मान्यता समेतको विपरित भएकाले विपक्षीहरूको नाउँमा देहाय बमोजिमको आदेश जारी गरीपाउँ। निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाको शर्त र सुविधा) (दोस्रो संसोधन) विनियमावली, २०७७ अहिलेकै अवस्थामा लागु भएमा रिक्त स्थानमा खुल्ला प्रतियोगिताबाट नयाँ कर्मचारीहरू नियुक्त भई पदपुर्ती हुने र कानुन बमोजिम करारमा शुरू नियुक्त भएका हामी निवेदक कर्मचारीहरू स्थायी नियुक्ति पाउनबाट सधैँका लागि बन्चित हुने र खाई पाई



आएको रोजगारबाट च्युत हुनु पर्ने अवस्था सृजना भई निवेदकहरूलाई अपुरणीय क्षती हुने हुँदा मुद्दाको पवित्रता (Bonafideness), सुविधा सन्तुलन (Balance of Convenience) र Prima Facia का आधारमा प्रस्तुत रिट निवेदनको अन्तिम टुङ्गो नलागेसम्मको लागि निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाको शर्त र सुविधा) (दोस्रो संसोधन) विनियमावली, २०७७ बमोजिम कुनै पनि प्रकारको पदपुर्ति सम्बन्धी कार्य नगर्नु नगराउनु र तत् सम्बन्धि व्यवस्थाहरू कार्यन्वयन नगर्नु नगराउनु यथास्थितीमा राख्नु भनी सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ४९ बमोजिम विपक्षीहरूको नाममा अन्तरिम आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने मिति २०७८।४।११ को निवेदन पत्र।

७. यसमा के कसो भएको हो? निवेदकको माग बमोजिम उत्प्रेषणको आदेश किन जारी हुन नपर्ने हो? आदेश जारी हुनु नपर्ने भए सोको आधार र कारण सहित बाटोको म्याद बाहेक सूचना म्याद पाएका मितिले १५ (पन्ध्र) दिनभित्र आफै वा आफ्नो कानून बमोजिमको प्रतिनिधि मार्फत लिखित जवाफ पेश गर्नु भनी विपक्षी नं. ७, ८ र ९ लाई तथा महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय मार्फत लिखित जवाफ पेश गर्नु भनी विपक्षी नं. १, २, ३, ४, ५, ६ लाई प्रस्तुत आदेश र रिट निवेदनको एक/एक प्रति नक्कलसमेत साथै राखी विपक्षीहरूका नाममा सूचना म्याद जारी गरी म्यादभित्र लिखित जवाफ परे वा अवधि व्यतित भएपछि नियमानुसार गरी पेश गर्नु।
८. अन्तरिम आदेश माग भएतर्फ विचार गर्दा, यसमा दुवै पक्षको कुरा सुनी निर्णयमा पुग्न उचित हुने देखिएकोले सो सम्बन्धमा छलफलका लागि मिति २०७७।४।२० को पेशी तोकिएको जानकारी विपक्षीहरूलाई दिई नियमानुसार गरी पेश गर्नु भन्ने यस अदालतको मिति २०७८।४।१३ को आदेश।
९. विपक्षी निवेदकले दावी लिनु भएको विषयमा नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयको के कस्तो संलग्नता रहेको हो? साथै यस कार्यालयको के कस्तो काम, कारवाही वा निर्णयबाट निवेदकको के कस्तो संवैधानिक तथा कानूनी हक अधिकारको हनन् भएको हो? भन्ने सम्बन्धमा निवेदनमा कुनै कुरा उल्लेख भएको छैन। कसैका विरुद्ध कुनै कुराको दावी लिँदा तत्सम्बन्धमा रहेको संलग्नता र प्रत्यर्थी बनाउनु पर्नाको आधार र कारण निवेदनमा स्पष्टसँग उल्लेख गरिएको हुनुपर्दछ। सोको अभावमा प्रत्यर्थी कायम गर्न र रिट



जारी हुन सकदैन। प्रस्तुत रिट निवेदनमा विपक्षी निवेदकले दावी लिनु भएको विषयमा यस कार्यालयको संलग्नता एवं यस कार्यालयलाई प्रत्यर्थी बनाउनु पर्नाको आधार र कारण खुल्लाउन नसकेको हुँदा रिट निवेदन प्रथम दृष्टि मै खारेजभागी छ। विकास समिति ऐन, २०१३ को दफा ४ मा दफा ३ वा ३क. अन्तर्गत गठन भएको प्रत्येक समिति अविच्छिन्न उत्तराधिकारवाला संगठित संस्था (कपोरेट बडी) हुनेछ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। विकास समिति ऐन, २०१३ को दफा ३ ले दिएको अधिकारको प्रयोग गरी नेपाल सरकारले निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ (यसपछि "गठन आदेश" भनिएको) जारी गरेको हो। आदेशको दफा ३ मा बहालवाला तथा सेवा निवृत्त निजामती कर्मचारी र तिनको परिवारको स्वास्थ्योपचार सम्बन्धी व्यवस्था गर्नका लागि निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (यसपछि "विकास समिति" भनिएको) गठन हुनेछ भन्ने व्यवस्था बमोजिम गठित विकास समितिबाट कानूनको परिधिभित्र रही गरेको काम कारवाहीलाई निवेदकले अन्यथा भन्न मिल्ने देखिँदैन।

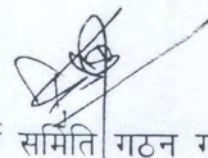
१०. गठन आदेशको दफा १५ को उपदफा (१) मा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको स्वीकृति लिई विनियम बनाई लागू गर्न तथा आवश्यकताका आधारमा संशोधन गर्न सक्ने व्यवस्था रहे बमोजिम विकास समितिले आफ्नो आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरुको सेवाको शर्त र सुविधा) (दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी गरी कार्यान्वयनमा रहेको देखिन्छ। त्यसैगरी दफा ४ मा अस्पतालको व्यवस्थापन तथा सञ्चालन गर्ने गराउने, अस्पतालको लागि आवश्यक प्राविधिक र प्रशासनिक पदहरुको दरबन्दी सिर्जना गर्ने लगायतका समग्र व्यवस्थापकीय काम, कर्तव्य र अधिकार उक्त समितिलाई प्रदान गरिएको छ। कानूनले दिएको अधिकारको प्रयोग गरी निजामती अस्पतालबाट उपलब्ध हुने सेवालाई प्रभावकारी बनाउन र अस्पतालको उद्देश्य प्राप्तिका लागि आवश्यक कार्य गरेकोमा निवेदन माग दावीलाई उचित मान्न सकिँदैन। आदेशको दफा ७ को उपदफा (४) मा अस्पतालको दरबन्दीमा आफ्नै श्रोतबाट तलब भत्ता दिने गरी समितिले आवश्यक प्राविधिक तथा प्रशासनिक कर्मचारीहरु नियुक्त गर्न तथा परामर्श सेवा लिन सक्ने व्यवस्था गरी उपदफा (९) मा अस्पतालका कर्मचारीको नियुक्ति प्रक्रिया, सेवाको शर्त र सुविधा तोकिए बमोजिम हुने व्यवस्था रहेको छ। समितिले स्वास्थ्य क्षेत्रको विकासका लागि

निजामती अस्पतालका कर्मचारीको नियुक्ति प्रक्रिया लगायत अन्य सेवा निर्धारण गर्न सक्ने अधिकार आफूमा निहित भएकोमा सोही बमोजिम काम कारवाही भएको अवस्थाले कानूनी वैधानिकता समेत प्राप्त गर्ने भएकोले निवेदन जिकिरलाई उचित मात्र सकिँदैन।

११. नेपालको संविधानले गरेको व्यवस्था अनुरूप हुने गरी लोकसेवा आयोग परामर्श र संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धित कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त, २०७४ मा उल्लेख भए अनुरूप नै निजामती कर्मचारी अस्पतालको (कर्मचारी सेवाको शर्त र सुविधा) विनियमावली, २०७० को दोस्रो संशोधन जारी गरिएको विषयको सम्बन्धमा यस कार्यालयलाई विपक्षी कायम गरी रिट निवेदन दायर गर्न नमिल्ने हुँदा रिट निवेदन खारेज भागी छ, खारेज गरी पाउँ भन्ने नेपाल सरकार प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयको तर्फबाट ऐ. का सचिव धनराज ज्ञवालीको पेश गरेको मिति २०७८।५।१५ को लिखित जवाफ।

१२. निजामती सेवामा बहालवाला तथा सेवा निवृत्त निजामती कर्मचारी र तिनको परिवारको स्वास्थ्योपचार सम्बन्धी व्यवस्था गर्नका लागि जारी भएको गठन आदेशको दफा ३ मा निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको गठन सम्बन्धी व्यवस्था गरी दफा ४ मा अस्पतालको व्यवस्थापन तथा सञ्चालन गर्ने गराउने, अस्पतालको लागि आवश्यक प्राविधिक र प्रशासनिक पदहरूको दरबन्दी सिर्जना गर्ने लगायतका समग्र व्यवस्थापकीय काम, कर्तव्य र अधिकार सो समितिलाई प्रदान गरिएको छ। गठन आदेशको दफा ७ को उपदफा (४) मा अस्पतालको दरबन्दीमा आफ्नै श्रोतबाट तलब भत्ता दिने गरी समितिले आवश्यक प्राविधिक तथा प्रशासनिक कर्मचारीहरू नियुक्त गर्न तथा परामर्श सेवा लिन सक्ने व्यवस्था गरी उपदफा (९) मा अस्पतालका कर्मचारीको नियुक्ति प्रक्रिया, सेवाको शर्त र सुविधा तोकिए बमोजिम हुने व्यवस्था रहेको छ। सोही गठन आदेशको दफा १५ को उपदफा (१) मा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको स्वीकृति लिई विनियम बनाई लागू गर्न सक्ने व्यवस्था रहे बमोजिम समितिले अस्पतालका कर्मचारीको सेवाको शर्त र सुविधा सम्बन्धी विनियमावली बनाई लागू गर्न तथा आवश्यकता आधारमा संशोधन गर्ने सक्ने कुरामा अन्यथा भन्न मिल्ने हुँदैन।

१३. विकास समिति ऐन, २०१३ को दफा ३ को उपदफा (१) मा नेपाल सरकारले उचित वा आवश्यक ठहराएमा सूचित आदेशद्वारा सोही आदेशमा तोकिए बमोजिमको कुनै विकास



योजना वा विकास कार्यलाई कार्यान्वयन गर्न समिति गठन गर्न सक्नेछ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। त्यसैगरी सोही ऐनको दफा ४ मा दफा ३ वा ३क. अन्तर्गत गठन भएको प्रत्येक समिति अविच्छिन्न उत्तराधिकारवाला संस्था (कर्पोरेट बडी) हुने छ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। उक्त कानूनी व्यवस्था बमोजिमको गठन आदेश अनुरूपको विकास समितिले आफ्नो आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाको शर्त र सुविधा) (दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी गरी कार्यान्वयन गरेको हो। नेपालको संविधानले गरेको व्यवस्था अनुरूप हुने गरी लोकसेवा आयोगको परामर्श र संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धित कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त २०७४ मा उल्लेख भए अनुरूप नै निजामती कर्मचारी अस्पतालको (कर्मचारी सेवाको शर्त र सुविधा) विनियमावली, २०७० को दोस्रो संशोधन गरिएको हुनाले सो विषयमा यस मन्त्रालयलाई विपक्षी कायम गरी रिट निवेदन दायर गर्न नमिल्ने हुँदा रिट निवेदन खारेज भागी छ, खारेज गरी पाउँ भन्ने नेपाल सरकार, संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयका तर्फबाट ऐ. का सचिवले पेश गरेको मिति २०७८।५।१० को लिखित जवाफ।

१४. सर्वप्रथमतः यस मन्त्रालयको के कस्तो कामकारवाही वा निर्णयबाट निवेदकको के कस्तो कानूनी तथा संवैधानिक अधिकारमा आघात पुग्न गएको हो? सो सम्बन्धमा रिट निवेदन जिकिरमा कुनै कुरा उल्लेखसम्म गर्न नसकेको हुँदा विना आधार र कारण यस मन्त्रालयलाई विपक्षी कायम गरी रिट निवेदन दायर गर्न मिल्ने पनि होइन। साथै कुनै मुद्दामा विपक्षी कायम गर्दा त्यस्तो विपक्षीको के कस्तो काम कारवाहीबाट निवेदकलाई के कस्तो अन्याय पर्न गएको हो सो कुरा खुल्लाउनु पर्ने हुन्छ सो सम्बन्धमा समेत रिट निवेदनमा कुनै कुरा उल्लेख गर्न नसकेको हुँदा रिट निवेदन जिकिर प्रथम दृष्टिमा नै खारेज भागी छ।
१५. बहालवाला तथा सेवा निवृत्त निजामती कर्मचारी र तिनको परिवारको स्वास्थ्योपचार सम्बन्धी व्यवस्था गर्नका लागि जारी भएको निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ (यसपछि "गठन आदेश" भनिएको) को दफा ३ मा निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको गठन सम्बन्धी व्यवस्था गरी दफा ४ मा अस्पतालको व्यवस्थापन तथा सञ्चालन गर्ने, गराउने, अस्पतालको लागि आवश्यक प्राविधिक र प्रशासनिक

पदहरूको दरबन्दी सिर्जना गर्ने लगायतका समग्र व्यवस्थापकीय काम, कर्तव्य र अधिकार सो समितिलाई प्रदान गरिएको छ। गठन आदेशको दफा ७ को उपदफा (४) मा अस्पतालको दरबन्दीमा आफ्नै स्रोतबाट तलब भत्ता दिने गरी समितिले आवश्यक प्राविधिक तथा प्रशासनिक कर्मचारीहरू नियुक्त गर्न तथा परामर्श सेवा लिन सक्ने व्यवस्था गरी उपदफा (९) मा अस्पतालका कर्मचारीको नियुक्ति प्रकृया, सेवाको शर्त र सुविधा तोकिए बमोजिम हुने व्यवस्था रहेको छ। सोही गठन आदेशको दफा १५ को उपदफा (१) मा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको स्वीकृति लिई विनियम बनाई लागू गर्न सक्ने व्यवस्था रहे बमोजिम समितिले अस्पतालका कर्मचारीको सेवाको शर्त र सुविधा सम्बन्धी विनियमावली बनाई लागू गर्न तथा आवश्यकताका आधारमा संशोधन गर्न सक्ने कुरामा अन्यथा भन्न मिल्ने हुँदैन।

१६. विकास समिति ऐन, २०१३ को दफा ३ को उपदफा (१) मा नेपाल सरकारले उचित वा आवश्यक ठहराएमा सूचित आदेशद्वारा सोही आदेशमा तोकिए बमोजिमको कुनै विकास योजना वा विकास कार्यलाई कार्यान्वित गर्न समिति गठन गर्न सक्नेछ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। त्यसैगरी सोही ऐनको दफा ४ मा दफा ३ वा ३क. अन्तर्गत गठन भएको प्रत्येक समित अविच्छिन्न उत्तराधिकारवाला संस्था (कर्पोरेट बडी) हुनेछ र त्यस समिति जिम्माको सबै कामका निमित्त एउटै छाप हुनेछ र व्यक्ति सरह चल अचल सम्पत्ति लेनदेन गर्ने तथा राख्ने त्यस समितिलाई अधिकार हुनेछ। सो समितिले व्यक्ति सरह नालेश गर्न र निज उपर पनि व्यक्ति सरह नालेश उजुर लाग्न सक्ने व्यवस्था रहेको छ। उक्त कानूनी व्यवस्था बमोजिम सम्बन्धित विकास समितिले आफ्नो आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा शर्त तथा सुविधा)(दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी गरी कार्यान्वयन गरेको विषयमा यस मन्त्रालयलाई विपक्षी कायम गरी रिट निवेदन दायर गर्न मिल्ने पनि नहुँदा रिट निवेदन जिकिर खारेजभागी छ, खारेज गरी पाउँ भन्ने कानून, न्याय तथा संसदीय मामिला मन्त्रालयको लिखित जवाफ।

१७. रिट निवेदकले यस मन्त्रालयलाई के कुन आधारमा विपक्षी बनाउनु भएको हो? यस मन्त्रालयको के, कस्तो संलग्नता रहेको हो? साथै यस मन्त्रालयको हनन भएको हो? भन्ने सम्बन्धमा निवेदनमा कुनै कुरा उल्लेख छैन। कसैका विरुद्ध कुनै कुराको दावी लिँदा तत् सम्बन्धमा रहेको संलग्नता र प्रत्यर्थी बनाउनु पर्ने आधार र कारण निवेदनमा स्पष्टसँग

उल्लेख गरिएको हुनुपर्छ। प्रस्तुत रिट निवेदनमा विपक्षी निवेदकले दावी लिन भएको विषयमा यस मन्त्रालयको संलग्नता एवं यस मन्त्रालयलाई प्रत्यर्थी बनाउनु पर्नाको आधार र कारण खुल्लाउन नसकेको हुँदा रिट निवेदन प्रथम दृष्टिमा नै खारेजभागी छ।

१८. विकास समिति ऐन, २०१३ को दफा ३ को उपदफा (१) मा "नेपाल सरकारले उचित वा आवश्यक ठहराएमा सूचित आदेशद्वारा सोही आदेशमा तोकिए बमोजिमको कुनै विकास योजना वा विकास कार्यलाई कार्यान्वित गर्न समिति गठन गर्न सक्नेछ" भन्ने व्यवस्था रहेको छ। त्यसैगरी ऐ. ऐनको दफा ४ मा "दफा ३ वा ३क. अन्तर्गत गठन भएको प्रत्येक समिति अविच्छिन्न उत्तराधिकारवाला संस्था (कर्पोरेट बडी) हुनेछ र त्यस समिति जिम्माको सबै कामका निमित्त एउटै छाप हुनेछ र व्यक्ति सरह चल अचल सम्पत्ति लेनदेन गर्ने तथा राख्ने त्यस समितिलाई अधिकार हुनेछ। सो समितिले व्यक्ति सरह नालेश गर्न र निज उपर पनि व्यक्ति सरह नालेश उजुर लाग्न सक्दछ" भन्ने व्यवस्था रहेकोमा उक्त कानूनी व्यवस्था बमोजिम निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ (यसपछि "गठन आदेश" भनिएको) बमोजिम निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको गठन भएको र सम्बन्धित विकास समितिले आफ्नो आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा शर्त तथा सुविधा) (दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी गरी कार्यान्वयनमा गरेको विषयमा यस मन्त्रालयलाई विपक्षी कायम गरी रिट निवेदन दायर गर्न मिल्ने नहुँदा रिट निवेदन जिकिर खारेजभागी छ।

१९. गठन आदेशको दफा ३ मा बहालवाला तथा सेवा निवृत्त निजामती कर्मचारी र तिनको परिवारको स्वास्थ्योपचार सम्बन्धी व्यवस्था गर्नका लागि निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको गठन भएको उल्लेख छ। ऐ. आदेशको दफा ४ मा अस्पतालको व्यवस्थापन तथा सञ्चालन गर्ने गराउने, अस्पतालको लागि आवश्यक प्राविधिक तथा प्रशासनिक पदहरूको दरबन्दी सिर्जना गर्ने लगायतका समग्र व्यवस्थापकीय काम, कर्तव्य र अधिकार सो समितिलाई प्रदान गरिएको देखिन्छ। आदेशको दफा ७ को उपदफा (४) मा अस्पतालको दरबन्दीमा आफ्नै स्रोतबाट तलब भत्ता दिने गरी समितिले आवश्यक प्राविधिक तथा प्रशासनिक कर्मचारीहरू नियुक्त गर्न तथा परामर्श सेवा लिन सक्ने व्यवस्था रहेको तथा उपदफा (९) मा अस्पतालका कर्मचारीको नियुक्ति प्रक्रिया, सेवाको शर्त र सुविधा तोकिए

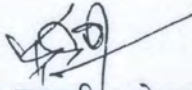
~~१६~~

बमोजिम हुनेछ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। ऐ. आदेशको दफा १५ को उपदफा (१) मा "यस गठन आदेशको प्रतिकूल नहुने गरी सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको स्वीकृति लिई समितिले आवश्यक विनियम बनाई लागू गर्न सक्नेछ" भन्ने व्यवस्था रहे बमोजिम समितिले अस्पतालका कर्मचारीको सेवाको शर्त र सुविधा सम्बन्धी विनियमावली बनाई लागू गर्न तथा आवश्यकता आधारमा संशोधन गर्न सक्ने नै हुँदा उक्त विषयमा संवैधानिक हक तथा निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ समेतको विपरित भयो भन्न मिल्ने होइन। साविकको निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीको सेवा, शर्त तथा सुविधा) विनियमावली, २०७० मा अस्पतालमा प्रवेश गर्ने एकमात्र विकल्प करारमा नियुक्ति रहेकोले त्यसरी नियुक्ति भएका कर्मचारीलाई आन्तरिक प्रतियोगितात्मक परीक्षा सञ्चालन गरी स्थायी नियुक्ति दिनुपर्ने भन्ने रिट निवेदन मागदावी नै नेपालको संविधान, गठन आदेश र सेवा करारको सिद्धान्त एवं वैध अपेक्षाको सिद्धान्त विपरित छ। उक्त विनियमावलीको दोस्रो संशोधन पूर्वको साविकको व्यवस्थालाई संशोधन गरी नेपालको संविधान अनुकूल बनाइएको देखिन्छ।

२०. साविकमा संगठित संस्थाहरूले आफैँले पदपूर्ति गर्दै आएको व्यवस्थालाई नेपालको संविधानको धारा २४३ को उपधारा (२) ले विस्थापित गरी सबै संगठित संस्थाहरूको सेवाको पदपूर्तिका लागि लोक सेवा आयोगले लिखित परीक्षा सञ्चालन गर्ने व्यवस्था गरेको छ। त्यसैगरी ऐ. को उपधारा (४) ले कुनै संगठित संस्थाको सेवाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून र त्यस्तो सेवाको पदमा बढुवा र विभागीय कारवाही गर्दा अपनाउनु पर्ने सामान्य सिद्धान्तको विषयमा लोक सेवा आयोगको परामर्श लिनुपर्ने बाध्यकारी व्यवस्था गरेको छ। साविकको विनियमावली उपर लोक सेवा आयोगको परामर्श नलिएको र उक्त विनियमावलीमा पदपूर्तिका लागि लिखित परीक्षा समेत निजामती कर्मचारी अस्पताल स्वयंले नै सञ्चालन गर्ने प्रावधान रहेको थियो। यस सन्दर्भमा निजामती कर्मचारी अस्पतालका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानूनको विषयमा लोक सेवा आयोगको परामर्श लिई विधिपूर्वक गरिएको संशोधन संविधान र कानून बमोजिम नै रहेको देखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन दावी संविधान र प्रचलित कानून विपरित देखिएको छ।

२१. रिट निवेदकले प्रस्तुत गरेका नजीरहरु प्रस्तुत विवादमा आकर्षित हुने देखिँदैनन्। करार नियुक्ति भनेको स्थायी प्रकृतिको होइन भन्नेमा विवाद छैन। विपक्षी निवेदकको अन्य सार्वजनिक निकायमा करारमा नियुक्त गरिने भन्दा निजामती कर्मचारी अस्पतालको सेवामा करारमा गरिने नियुक्ति विशेष र भिन्न हो भन्ने दावी सरासर मिथ्या देखिन्छ। सामान्यतः करार सेवाद्वारा नियुक्ति गर्दा स्थायी नियुक्ति गर्दाका विधि, प्रक्रिया र मापदण्ड अवलम्बन गरिएको हुँदैन। करारमा नियुक्ति भएको कर्मचारीको सेवा तथा शर्त करार सम्झौताद्वारा समेत निर्देशित हुन्छ। कुनै पनि करार सेवाको नियुक्ति स्थायी नियुक्ति सरह हुनै सक्दैन।


२२. निवेदकको मागदावी बमोजिम करार सेवामा नियुक्ति भएकाहरु बीच मात्र आन्तरिक प्रतियोगिता गराई स्थायी गर्नु गुण प्रणाली (Meritocracy or merit system) को विपरित हुन्छ। यस्तो प्रतियोगितालाई सीमित प्रतियोगिता भनिन्छ। यो कुनै वैध प्रचलन र अभ्यास नभई सेवामा आएको विकृति हो। विगतमा हुने गरेका यस्ता सीमित प्रतियोगिता लगायतका विकृतिको अन्त्य गरी गुण प्रणालीको स्थापना गर्न नेपालको संविधानमा नै सबै संगठित संस्थाको सेवाको पदमा पदपूर्ति गर्न लिखित परिक्षा लोक सेवा आयोगबाट सञ्चालन हुने र लोक सेवा आयोगले अवलम्बन गरेका गुण प्रणालीका सिद्धान्त, आधार, मापदण्ड कायम गर्न त्यस्तो संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानूनको विषयमा लोक सेवा आयोगको परामर्श लिनुपर्ने बाध्यकारी संवैधानिक व्यवस्था गरिएको छ। करार नियुक्ति विशेष वर्गीकरणमा पर्ने भन्ने हुनै सक्तैन। नेपालमा हाल कायम रहेका कुनै पनि सरकारी संगठित संस्थामा सीमित प्रतियोगिताको विकृत प्रावधान रहेको छैन। नेपालको संविधानको धारा २४३ को उपधारा (४) बमोजिम जारी गरी भएको "संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त, २०७४" ले सीमित प्रतियोगिताको प्रावधान त्यस्ता संगठित संस्थाको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानूनमा राख्न नमिल्ने गरी पूर्णतः निषेध गरेको छ। विपक्षी निवेदकले उक्त सामान्य सिद्धान्त उपर चुनौती दिएको अवस्था छैन। विगतमा संगठित संस्थामा विकृतिको रूपमा रहेको सीमित प्रतियोगितालाई संवैधानिक व्यवस्था बमोजिम अन्त्य गरिसकिएको अवस्थामा करारमा नियुक्ति भएका रिट निवेदकहरुको हकमा पुनः त्यस्तो सीमित प्रतियोगिताको आधारमा स्थायी नियुक्ति गर्नु, गराउनु भनी आदेश जारी गरिपाउन लिएको मामा दावी नेपालको संविधान, लोक सेवा



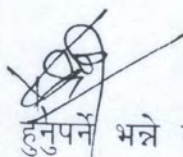
आयोगबाट जारी सामान्य सिद्धान्त र गुण प्रणाली समेतको विपरित हुने देखिन्छ। अतः रिट निवेदकले साविकको विनियमावलीले व्यवस्था गरेकोले करारमा नियुक्ति भएका आफूहरूको स्थायी हुने र स्तरवृद्धि हुने वैध अपेक्षा रहेको भनी प्रकरण प्रकरणमा लिएको दावी नै वैध अपेक्षाको सिद्धान्त विपरित रहेको छ। वैध अपेक्षाको सिद्धान्त संगठनमा स्थायी प्रकृतिको नियुक्ति प्राप्त गरी सेवारत रहेका कर्मचारीहरूको हकमा मात्र लागू हुने हो, न की अस्थायी, ज्यालादारी वा करार, सेवाका कर्मचारीको हकमा। बढुवा र वृत्ति विकास स्थायी कर्मचारीको मात्र हुने हो, करार सेवामा नियुक्ति भएकाको हकमा निजसँग भएको करार सम्झौतामा उल्लेख भए बाहेक अन्य कुनै थप वृत्ति विकास र बढुवा हुने वैध अपेक्षा रहने हुँदैन। करार सेवामा नियुक्ति हुनेको हकमा अस्थायी रूपमा सम्बन्धित पदमा तोकिएको अवधिको लागि मात्र सेवाका सिद्धान्त लागू हुने हो। करारमा नियुक्ति भएका कर्मचारीको सीमित प्रतियोगिताको माध्यमबाट स्वतः स्थायी हुने जस्ता स्थायी हुने वैध अपेक्षा रहन्छ भन्ने सेवा कानून (सर्भिस ल) को सिद्धान्तको मान्यता होइन। रिट निवेदकले वैध अपेक्षाको सिद्धान्तको आफूखुशी मनोगत व्याख्या गरी लिएको दावी तथ्यहीन, भ्रामक र सेवा कानून विपरित देखिएको छ।

२३. कानून व्याख्या सम्बन्धी ऐन, २०१० को दफा ४ को खण्ड (ग) को व्यवस्था भनेको कुनै नेपाल ऐनले पहिले बनेको ऐन खारेज भएकोमा खारेज भएको ऐन अन्तर्गत हासिल गरेको, भोगेको हक, सुविधा, कर्तव्य र दायित्वमा असर नपर्ने भन्ने हो। रिट निवेदकहरूले साविकको विनियमावलीको बमोजिम स्थायी भइसकेको वा सुविधा हासिल गरिसकेको र भोगिसकेको अवस्था होइन। उक्त व्यवस्थाले खारेज भएको कानूनी व्यवस्था बमोजिम हासिल गर्न वा भोग्न बाँकी सुविधा प्राप्त गर्ने गरी कुनै संरक्षण प्रदान नगरेको अवस्थामा रिट निवेदकहरूको हकमा उक्त कानूनी व्यवस्था बमोजिम हुनुपर्ने भन्ने दावी सरासर उल्लिखित कानूनी व्यवस्था विपरित हुँदा खारेजभागी छ, खारेज गरी पाउँ भन्ने अर्थ मन्त्रालयको तर्फबाट परेको लिखित जवाफ।

२४. नेपालको संविधानको धारा २४३ को उपधारा (४) मा भएको व्यवस्था बमोजिम कुनै संगठित संस्थाको सेवाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून र त्यस्तो सेवाका पदमा बढुवा र विभागीय कारवाही गर्दा अपनाउनु पर्ने सामान्य सिद्धान्तको विषयमा यस आयोगको

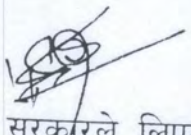


परामर्श लिनु पर्नेछ भन्ने प्रावधान बमोजिम संगठित संस्थामा कार्यरत कर्मचारीहरूका लागि लागू भएको नियम/विनियममा आयोगबाट जारी भएको सामान्य सिद्धान्त अनुकूल हुने गरी परिमार्जन गर्न पत्राचार गरिए बमोजिम परामर्श माग भई आएका विषयमा आयोगबाट संविधान बमोजिम संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त, २०७४ समेतका आधारमा परामर्श प्रदान हुँदै आएको छ। निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा शर्त तथा सुविधा) विनियमावली, २०७० उपर संशोधन गर्नका लागि आयोगको परामर्शको लागि प्राप्त हुन आएकोमा नेपालको संविधान, प्रचलित ऐन कानून, संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त, २०७४ बमोजिम संस्थाको कार्य प्रकृति, संगठन संरचना, पदको कार्य विवरण तथा जनशक्तिका आधारमा सेवाका शर्तहरू निर्धारण हुने हुँदा सोही बमोजिम आयोगबाट परामर्श प्रदान गरिएको निर्णय संविधान, सामान्य सिद्धान्त र लोक सेवा आयोग ऐन तथा नियम अनुरूप नै भएको हुँदा यस आयोगलाई समेत विपक्षी बनाई दायर भएको प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज भागी छ, खारेज गरी पाउँ। नेपालको संविधानको धारा २४३ को उपधारा (४) को प्रयोजनको लागि लोक सेवा आयोगले जारी गरेको संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त, २०७४ को दफा ४ को खण्ड (क) मा सीमित व्यक्तिहरूका बीच प्रतिस्पर्धा गरी पदपूर्ति गर्ने विषय संगठित संस्थाको कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी नियम, विनियम वा निर्देशिकामा समावेश गर्नु नहुने भनी व्यवस्था गरिएको र निवेदकहरूलाई खुल्ला प्रतिस्पर्धा रोक नलगाइएको हुँदा सोही बमोजिम आयोगले परामर्श दिने कार्य गरी आएको छ। निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको संवैधानिक र कानूनी व्यवस्था बमोजिम आयोगको परामर्श माग गरेको र आयोगले संविधान र सामान्य सिद्धान्त बमोजिम परामर्श दिएको विषयलाई निवेदकहरूले आफू अनुकूल परामर्श दिनुपर्दथ्यो वा कानून बन्नु पथ्यो भनी मागदावी गर्न मिल्ने होइन। कानून संगठनको आवश्यकता र समय सापेक्ष रूपमा संशोधन हुन सक्छ र संशोधित व्यवस्था सबैलाई समानरूपले लागू हुने गरी न्यायोचित पनि हुनुपर्छ। यसै तथ्यलाई मनन गरी आयोगले परामर्श दिँदा समान व्यक्तिहरूका बीचमा समान अवसर हुने गरी परामर्श दिएकोले निवेदन



जिकिर समानहरु बीच समान अवसर हुनुपर्ने भन्ने समानताको सामान्य सिद्धान्त र कानून अनुरूप समेत नभएकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेजभागी छ, खारेज गरी पाउँ साथै रिट निवेदकले रिट निवेदनमा लोक सेवा आयोगको के कस्तो काम कारवाहीबाट निजहरुको संवैधानिक तथा कानूनी हक अधिकार हनन भएको हो भन्ने सम्बन्धमा कही कतै उल्लेख गर्नु भएको नदेखिएकोले बिना आधार र कारण यस आयोगलाई समेत विपक्षी बनाई दायर भएको प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज गरी पाउन सादर अनुरोध गर्दछु भन्ने लोकसेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालयको तर्फबाट परेको लिखित जवाफ।


२५. निजामती सेवामा बहालवाला तथा सेवा निवृत्त निजामती कर्मचारी र तिनको परिवारको स्वास्थ्योपचार सम्बन्धी व्यवस्था गर्नका लागि जारी भएको निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ "यसपछि गठन आदेश" भनिएको) को दफा ३ मा निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको गठन सम्बन्धी व्यवस्था गरी दफा ४ मा अस्पतालको व्यवस्थापन तथा सञ्चालन गर्ने, गराउने, अस्पतालको लागि आवश्यक प्राविधिक र प्रशासनिक पदहरुको दरबन्दी सिर्जना गर्ने लगायतका समग्र व्यवस्थापकीय काम, कर्तव्य र अधिकार निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिलाई प्रदान गरिएको छ। गठन आदेशको दफा ७ को उपदफा (४) मा अस्पतालको दरबन्दीमा आफ्नै स्रोतबाट तलब भत्ता दिने गरी समितिले आवश्यक प्राविधिक तथा प्रशासनिक कर्मचारीहरु नियुक्त गर्न तथा परामर्श सेवा लिन सक्ने र उपदफा (९) मा अस्पतालका कर्मचारीको नियुक्ति प्रकृया, सेवाको शर्त र सुविधा तोकिए बमोजिम हुने व्यवस्था रहेको छ। त्यसैगरी दफा ८क मा समितिले अस्पतालका लागि आवश्यक पर्ने कर्मचारी कुनै सेवा अवधि तोकिए सेवा करारमा लिन सक्ने कानूनी व्यवस्था गरिएको छ। सोही गठन आदेशको दफा १५ को उपदफा (१) मा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको स्वीकृति लिई विनियम बनाई लागू गर्न सक्ने व्यवस्था रहे बमोजिम समितिले मिति २०७०।८।२७ मा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको स्वीकृतिमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरुको सेवाको शर्त र सुविधा) विनियमावली, २०७० जारी गरी सोही विनियमावली बमोजिम अस्पताललाई आवश्यक पर्ने कर्मचारी तथा जनशक्तिको पदपूर्ति गर्दै आएको छ। यसै क्रममा सबै वर्ग वा समुदायलाई राज्यको



मूलप्रवाहमा समाहीकरण गर्ने नेपाल सरकारले लिएको आरक्षणको निति बमोजिम कर्मचारी विनियमावलीमा पहिलो संशोधन गरी लागू गरिएको छ।

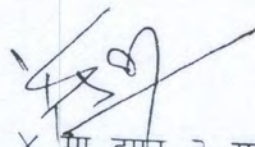
२६. नेपालको संविधानको धारा २४३ को उपधारा (४) मा कुनै संगठित संस्थाको सेवाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून र त्यस्तो सेवाका पदमा बढुवा र विभागीय कारवाही गर्दा अपनाउनु पर्ने सामान्य सिद्धान्तको विषयमा लोक सेवा आयोगको परामर्श लिनुपर्नेछ भन्ने संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ। त्यसैगरी लोकसेवा आयोगको संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धित कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त २०७४ मा गरिएको व्यवस्था अनुसार निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाका शर्त र सुविधा) विनियमावली, २०७० मा संशोधन आवश्यक भएकोले अस्पताल विकास समितिको बैठक नं. ९३, मिति २०७७।८।२४ गते भएको निर्णय अनुसार निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाका शर्त र सुविधा) (दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ को मस्यौदा उपर लोकसेवा आयोगको ०७७।७८, च.नं. ४० को पत्रबाट प्राप्त परामर्श अनुरूप परिमार्जन गरी लागू गरिएको हो। उक्त संशोधित विपक्षी निवेदकको हक अधिकार कुण्ठित गर्ने कार्य नगरिएको बेहोरा निवेदन गर्दछ।

२७. संशोधित विनियमावलीमा गरिएको व्यवस्था बमोजिम तोकिएको योग्यता पुगेका निवेदक समेत विज्ञापनमा सहभागी हुने पाउने हुँदा निजहरूलाई अवसरबाट वञ्चित गरिएको वा निजहरूको मौलिक हक कुण्ठित भएको भनि मात्र मिल्ने पनि हुँदैन। साथै उक्त संशोधनको नेपालको संविधानको धारा १८ द्वारा प्रदत्त पेशा रोजगार सम्बन्धी निवेदकको मौलिक हक उल्लंघन गरेको नभई सेवा प्रवेश गर्न चाहने अन्य इच्छुक नेपाली नागरिकलाई समेत प्रतिस्पर्धीमा सहभागी हुने अवसर प्रदान गरेको कुरालाई अन्यथा भन्न मिल्ने पनि हुँदैन। साथै करारमा नियुक्ति भएकोले विशेष सुविधाको माग गर्नु समानताको सिद्धान्त विपरित हुनुको साथै स्वतः स्थायी हुन पाउनु पर्ने प्रकृतिको माग दावी लिनु करारको सामान्य सिद्धान्तको समेत प्रतिकूल हुन जान्छ।

२८. विकास समिति ऐन, २०१३ को दफा ३ को उपदफा (१) मा नेपाल सरकारले उचित वा आवश्यक ठहराएमा सूचित आदेशद्वारा सोही आदेशमा तोकिए बमोजिमको कुनै विकास योजना वा विकास कार्यलाई कार्यान्वित गर्न ~~समिति~~  गर्न सक्नेछ भन्ने व्यवस्था रहेको

रविप्रकाश शर्मासमेत वि. प्रधानमन्त्रि तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय सिंहदरवारसमेत, मुद्दा: उत्प्रेषण परमादेशसमेत। ०७८-WO-००५६,

०७८-WO-०४१७ पृ. २७

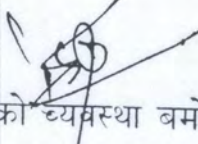


छ। त्यसैगरी सोही ऐनको दफा ४ मा दफा ३ मा ३क. अन्तर्गत गठन भएको प्रत्येक समिति अविच्छिन्न उत्तराधिकारवाला संस्था (कर्पोरेट बडी) हुनेछ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। उक्त कानूनी व्यवस्था बमोजिम निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिले आफ्नो आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा शर्त तथा सुविधा)(दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी गरेको कुरालाई अन्यथा भन्न मिल्ने नहुँदा रिट निवेदन जिकिर खारेज भागी छ, खारेज गरी पाउँ भन्ने निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति र पदपूर्ति समितिको तर्फबाट उपसचिव भोलाप्रसाद चापागाईले पेश गरेको लिखित जवाफ।

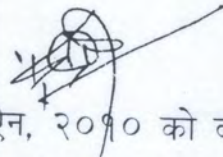
२९. यसमा प्रत्यर्थीहरूको तर्फबाट लिखित जवाफ परिसकेको देखिँदा पूर्ण सुनुवाईको लागि २०७८-WO-००५६ को रिट निवेदन साथै राखी नियमानुसार पेश गर्नु भन्ने मिति २०७८।१२।१३ को यस अदालतको आदेश।

ठहर खण्ड

३०. नियम बमोजिम दैनिक पेशी सूचीमा चढी निर्णयार्थ इजलास समक्ष पेश हुन आएको प्रस्तुत रिट निवेदनमा रिट निवेदकहरूको तर्फबाट उपस्थित विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ताद्वय श्री कृष्णप्रसाद सापकोटा, डा. श्री भिमार्जुन आचार्य र विद्वान अधिवक्ता श्री विपिन सुवेदीले रिट निवेदकहरू विभिन्न पद र तहमा विभिन्न मितिमा संचालन भएका प्रतियोगितात्मक परीक्षामा सहभागी भई खुल्ला प्रतिस्पर्धाबाट छनौट भई निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा, शर्त तथा सुविधा) विनियमावली, २०७० बमोजिम करार सेवामा शुरु नियुक्त भएका कर्मचारी हुन्। उक्त विनियमावली बमोजिम करार सेवामा शुरु नियुक्त भई चार वर्ष सेवा अवधि पुरा गरेका कर्मचारीहरूको लागि परिक्षा संचालन गरी उत्तीर्ण उम्मेदवारलाई स्थायी नियुक्ति गर्ने विनियमावलीको साबिकको व्यवस्था खारेज गर्ने गरी निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको मिति २०७७।१०।१८ को निर्णयबाट जारी भएको निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा शर्त तथा सुविधा) (दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ को विनियम २८ को व्यवस्था नेपालको संविधानको धारा १८, निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ समेतको विपरित भएकाले समितिको मिति २०७७।१०।१८ को निर्णय, सो निर्णय बमोजिम भए गरिएका काम कारवाही उत्प्रेषणको



आदेशले बदर गरी उक्त संशोधन पूर्वको व्यवस्था बमोजिम निवेदकहरूलाई स्थायी नियुक्तिको लागि मुल विनियम ३१ बमोजिम कर्मचारी विनियमावली २०७० को मुल अनुसूचि ३ अन्तर्गत सेवामा रहने पदहरू र मुल अनुसूची ५ अनुसारको न्यूनतम योग्यता अनुसार नै हुने गरी परिक्षा संचालन गरी स्थायी नियुक्तिको लागि अवसर प्रदान गर्नु गराउनु, स्थायी नियुक्ति दिनु दिलाउनु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा परमादेश लगायतको आवश्यक र उचित आदेश जारी हुनुपर्दछ भनी गर्नुभएको बहस सुनियो। विपक्षी निजामती कर्मचारी अस्पतालका तर्कबाट उपस्थित विद्वान अधिवक्ता श्री परशुराम घिमिरेले विकास समिति ऐन, २०१३ को दफा ३(१) मा नेपाल सरकारले उचित वा आवश्यक ठहराएमा सूचित आदेशद्वारा सोही आदेशमा तोकिए बमोजिमको कुनै विकास योजना वा विकास कार्यलाई कार्यान्वयन गर्न समिति गठन गर्न सक्नेछ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। त्यसैगरी सोही ऐनको दफा ४ मा दफा ३ वा ३(क) अन्तर्गत गठन भएको प्रत्येक समिति अविच्छिन्न उत्तराधिकारवाला संस्था हुनेछ भन्ने व्यवस्था रहेको छ। सो कानूनी व्यवस्था बमोजिम निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिले आफ्नो आवश्यकता र औचित्यका आधारमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा, शर्त तथा सुविधा) (दोश्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी गरेको कुरालाई अन्यथा भन्न मिल्ने नहुँदा रिट निवेदन जिकिर खारेज गरी पाउँ भनी गर्नुभएको बहस र विपक्षी नेपाल सरकारको तर्फबाट उपस्थित विद्वान सहन्यायाधिवक्ता श्री खेमराज ज्ञवालीले रिट निवेदकले साबिक विनियमावलीले व्यवस्था गरेकोले करारमा नियुक्ति भएका, आफुहरूले स्थायी हुने र स्तर वृद्धि हुने वैध अपेक्षा रहेको भनी लिएको दावी नै वैध अपेक्षाको सिद्धान्त संगठनमा स्थायी प्रकृतिको नियुक्ति प्राप्त गरी सेवारत रहेका कर्मचारीहरूको हकमा मात्र लागु हुने हो। न की अस्थायी, ज्यालादारी वा करार सेवाका कर्मचारीको हकमा बढुवा र वृत्ति विकास स्थायी कर्मचारीको हकमा मात्र हुने हो। करार सेवामा नियुक्ति भएकाको हकमा निजसँग भएको करार सम्झौतामा उल्लेख भए वाहेक अन्य कुनै थप वृत्ति विकास र बढुवा हुने वैध अपेक्षा रहने हुँदैन। करार सेवामा नियुक्ति हुनेको हकमा अस्थायी रूपमा सम्बन्धित पदमा तोकिएको अवधिको लागि मात्र सेवाका सिद्धान्त लागु हुने हो। करार सेवामा नियुक्ति भएका कर्मचारीको सिमित प्रतियोगिताको माध्यमबाट स्वतः स्थायी हुने जस्तो स्थायी हुने वैध अपेक्षाको सिद्धान्त आफुखुसी मनोगत व्याख्या गरी लिएको दावी तथ्यहीन भई कानून विपरित



रहेको छ। कानून व्याख्या सम्बन्धी ऐन, २०१० को दफा ४(ग) को व्यवस्था भनेको कुनै नेपाल ऐनले पहिले बनेको ऐन खारेज भएकोमा खारेज भएको ऐन अन्तर्गत हासिल गरेको, भोगको हक, सुविधा, कर्तव्य र दायित्वमा असर नपर्ने भन्ने हो। उक्त व्यवस्थाले खारेज भएको कानूनी व्यवस्था बमोजिम हासिल गर्न वा भोग्न बाँकी सुविधा प्राप्त गर्ने कुनै संरक्षण प्रदान नगरेको अवस्थामा रिट निवेदकहरूको हकमा उक्त कानूनी व्यवस्था बमोजिम हुनुपर्ने भन्ने निवेदन दावी कानूनी व्यवस्था विपरित हुँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज भागी छ भनी गर्नुभएको बहस सुनियो।

३१. विद्वान अधिवक्ताहरू तथा विद्वान सह-न्यायाधिवक्ताको विद्वतपूर्ण बहस जिकिर एवं मिसिल संलग्न कागजातहरूको अध्ययन भई अब प्रस्तुत रिट निवेदनमा निवेदकको माग बमोजिम रिट जारी हुने हो वा होइन? भन्ने सम्बन्धमा निर्णय दिनुपर्ने देखिन आयो।
३२. हामी निवेदकहरू निजामती कर्मचारी अस्पताल मिनभवन काठमाडौँमा निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाको शर्त तथा सुविधा) विनियमावली, २०७० को विनियम २८ र २९ बमोजिम खुल्ला प्रतियोगितात्मक परीक्षामा सहभागी भई खुल्ला प्रतिस्पर्धाबाट विभिन्न पद र तहमा छनौट भई करारमा शुरू नियुक्ति भएका कर्मचारीहरू हौं। उक्त विनियमावलीले अस्पतालमा आवश्यक प्रशासन सेवा र प्राविधिक सेवामा पदपूर्तिका लागि पदपूर्ति समितिले पदसंख्या निर्धारण गरी खुल्ला प्रतियोगितात्मक परीक्षाबाट करारमा शुरू नियुक्ति भएका कर्मचारीहरूको विनियमावलीको विनियम ३१ बमोजिम सेवा अवधि चार वर्ष भई ५ वर्ष पुरा हुनु अघि आन्तरिक परीक्षाबाट स्थायी नियुक्ति गर्ने र प्रतियोगिता र कार्यक्षमताको मुल्यांकनका आधारमा बहुवाबाट निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीको सेवा शर्त र सुविधा) (दोश्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी गरी कर्मचारी नियुक्ति, प्रकृया र सेवाका शर्तहरूमा विविध परिमार्जन गरेको छ। संशोधित विनियमावलीको विनियम २८ को व्यवस्थाले विनियमावलीको विनियम १३, २९, ३१ र १२५ पूर्ण रूपमा खारेज गरी करारमा कार्यरत कर्मचारीका लागि स्थायी नियुक्ति गर्ने सम्बन्धी व्यवस्था नै खारेज गरी कर्मचारीहरूको हक हित तथा व्यवस्थापनका सम्बन्धमा कुनै व्यवस्था नभएकोले निवेदकहरूको संवैधानिक हक तथा निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ विपरित भएकोले विनियमावलीको संशोधित व्यवस्था उत्प्रेषणको आदेशले

~~50~~

बदर गरी निवेदकहरूलाई स्थायी नियुक्तिको अवसर प्रदान गर्न उपयुक्त आदेश जारी गरी पाउँ भन्ने निवेदन जिकिर रहेको पाइयो। विपक्षी निवेदकहरूको उल्लेख गरेको निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवा, शर्त र सुविधा) (दोस्रो संशोधन) विनियमावली २०७७ को व्यवस्था र निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिको मिति २०७७।१०।१८ को निर्णय तथा काम कारवाहीमा मन्त्रालयको कुनै संलग्नता रहेको छैन। सो निर्णय निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समितिले गरेको तथ्य निवेदनको प्रकरण ४ मा उल्लेख गरिएको छ। यस अवस्थामा मन्त्रालयलाई विपक्षी बनाउनुको कुनै औचित्य छैन। निवेदकहरूले निवेदनको प्रकरण ८ मा लिएको माग दावीका सम्बन्धमा निजामती कर्मचारी अस्पतालको मिति २०७७।१०।१८ को निर्णय बदर माग गरिएको वास्तविकताले नै मन्त्रालयको सरोकार नभएको थप पुष्टी भएको छ। निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ तथा निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (कर्मचारीहरूको सेवा, शर्त र सुविधा) विनियमावली, २०७७ बमोजिम नै निजामती अस्पताल विकास समितिका कर्मचारीहरूको सेवाका शर्त र सुविधा सम्बन्धी व्यवस्था संचालन हुनुका साथै अस्पताल विकास समितिको सम्पर्क मन्त्रालयसमेत संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालय रहेको निवेदन माग दावीको सन्दर्भमा विपक्षी नेपाल सरकारका तत मन्त्रालयहरूको कुनै सहभागिता नभएको साथै मन्त्रालयका के, कुन निर्णय र काम कारवाहीहरूले निवेदकहरूको हक अधिकार हनन् भएको हो? सो समेत खुल्लाउन नसकेको अवस्थामा रिट निवेदकहरूको मागदावी अनुसार रिट जारी हुने, होइन? प्रस्तुत रिट खारेजभागी छ भन्ने समेत बेहोराको विपक्षीहरूको लिखित जवाफ रहेको देखियो।

३३. अब निर्णयतर्फ विचार गर्दा प्रस्तुत रिट निवेदनमा माग गरिएका विषयवस्तु विपक्षीहरूको लिखित जवाफ दुवै पक्षबाट उपस्थित विद्वान कानून व्यवसायीका बहस बुँदा समेतका दृष्टिबाट देहायका मुख्य सवालहरूको विवेचना हुनु पर्ने देखिन आउँछ।


(क) निवेदकहरू के कुन कानूनका के कस्ता शर्त व्यवस्था बमोजिम नियुक्त भएका भन्ने देखिन्छन्?

(ख) निवेदकहरूले आफु नियुक्त हुँदाका बखतका कानूनी शर्त व्यवस्था बमोजिमका कानून पालना भएको देखिन्छ देखिँदैन?

(ग) निवेदकहरुको हक अधिकारमा दखल एवम् प्रतिकूल प्रभाव परेको अवस्था देखिन्छ देखिँदैन?

(घ) रिट निवेदन जारी हुन सक्ने अवस्था छ छैन?

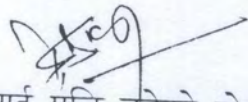
३४. अब पहिलो सवालको सम्बन्धमा हेर्दा, निजामती कर्मचारीको परिवारको स्वास्थ्य उपचार छिटो छरितो सुविधापूर्ण तवरले गर्ने हेतु निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति (गठन) आदेश, २०६४ जारी भई निजामती कर्मचारी अस्पताल स्थापना भई संचालनमा आएको अवस्था देखिन आउँछ। यसै गठन आदेशले दिएको अधिकार बमोजिम निजामती अस्पताल विकास समितिले निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरुको सेवाका शर्त तथा सुविधा) विनियमावली, २०७० बनाइ लागू गरेको देखिन्छ। सो विनियमावलीको अधिनमा रही अस्पतालमा आवश्यक विभिन्न जनशक्तिको प्रक्षेपण, पद श्रृजना एवम् पदपूर्तिको व्यवस्था गरेको देखिन्छ। सो विनियमावलीको नियम १४ बमोजिम अस्पतालमा खुल्ला प्रतियोगिता, आन्तरिक प्रतियोगिता, कार्यक्षमताको मूल्यांकन समेतका प्रकृतिका बहुवा व्यवस्था एवम् विनियम २९ बमोजिम करारमा नियुक्ति गर्ने समेतका व्यवस्था गरेको देखिन्छ। विनियमावलीको विनियम ३१ ले अन्य व्यवस्थाका अतिरिक्त विनियम २९ बमोजिम करारमा नियुक्त कर्मचारीका हकमा विशेष व्यवस्था गर्दै "३१. स्थायी नियुक्ति: (१) विनियम २९ बमोजिम नियुक्त भई करारमा चार वर्ष सेवा अवधि पूरा गरेका कर्मचारीहरुको लागि पदपूर्ति समितिले तोकेको समयतालिका बमोजिम लिखित तथा अन्तरवार्ता परीक्षा संचालन गरिने छ। यसरी परीक्षा संचालन गर्दा चार वर्ष सेवा अवधि पूरा गरेका प्रत्येक कर्मचारीको जम्मा सेवा अवधि पाँच वर्ष पुरा हुनु अघि परीक्षामा सम्मिलित हुने अवसर प्राप्त हुने गरी गरिनेछ" भन्ने व्यवस्था भएको देखिन आउँछ। त्यस्तै प्रकारको विनियमावलीको विनियम १२ उपविनियम (९) बमोजिम मेडिकल अफिसरहरु समेत करारमा नियुक्ति हुन सक्ने र विनियम ३१ को उपविनियम (७) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशले "स्थायी पूर्ति हुने गरी दरबन्दी श्रृजना भएको पदमा सो बमोजिमको संख्या ननाघने गरी चार वर्ष वा सो भन्दा बढि अवधि समान पदमा करारमा काम गरेकाहरु मध्ये प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाको माध्यमबाट छनौट भएका उम्मेदवारलाई स्थायी नियुक्ति गर्न सकिनेछ" भन्ने व्यवस्था रहे भएको देखिन आउँछ। विनियम १२५ बमोजिम "यो विनियमावली लागू हुनु भन्दा अगाडि खुल्ला प्रतियोगिताबाट



छनौट भई करारमा नियुक्ति कार्यरत कर्मचारीहरू यसै विनियमावली बमोजिम नियुक्ति भई कार्यरत रहेको मानिनेछ" भनी बचाउ व्यवस्था समेत गरेको देखिन आउँछ। यसरी निजामती कर्मचारी अस्पतालमा करारमा कार्यरत मेडिकल अफिसर, करारमा कार्यरत कर्मचारीसमेतका सम्बन्धमा उक्त विनियमावलीले अस्पतालमा वृत्ति विकासको अवसर सेवाप्रति समर्पणमा प्रोत्साहन र सेवा शर्तका सुरक्षा समेतको व्यवस्था गरेको पाइन्छ। रिट निवेदकहरू तत् अवस्थाका चिकित्सक समेत रही रहेको अवस्था भएको र उक्त विनियम १२(९) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांश एवम् विनियम ३१ को समयमा कार्यान्वयन नभएकोले आफूहरू साबिकको कानूनी व्यवस्थाको अवसरबाट वंचित भएको भन्ने निवेदक जिकिर देखिन आउँछ।

३५. अब दोस्रो सवालको अवस्थाको सम्बन्धमा हेर्दा, निजामती कर्मचारी अस्पतालका कर्मचारीको सेवा शर्त सुविधालाई नेपालको संविधान, २०७२ का प्रावधान समेतलाई दृष्टिगत गर्दै र संगठित संस्थाका कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धी कानून बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धमा सामान्य सिद्धान्त, २०७४ जारी भएको देखिन्छ। सोही सिद्धान्तलाई आधार मान्दै निजामती कर्मचारी अस्पताल कर्मचारीहरूको सेवाका शर्त र सुविधा (दोस्रो संशोधन) विनियमावली, २०७७ जारी भएको भन्ने देखिन आउँछ। उक्त २०७७ को दोस्रो संशोधनले विनियमावलीको साबिक विनियमावलीको विनियम १२(९) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांश हटाउनुका साथै साबिक विनियमावलीको विनियम ३१ समेतका प्रावधानहरू खारेज गरेको देखिन आउँछ। परिणामतः साबिक विनियमावली २०७० को विनियम १२(९) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांश र विनियमावलीको विनियम ३१ उपविनियम ७ बमोजिमका मेडिकल अधिकृत वा विनियम २९ बमोजिम नियुक्त करार सेवाका कर्मचारीले विनियम ३१(१) बमोजिमको सुविधाबाट वंचित हुनुपर्ने अवस्था देखिन आउँछ। विपक्षी निजामती कर्मचारी अस्पताल समेतका विपक्षीहरूको लिखित जवाफ हेर्दा पनि तत् पश्चात साबिकको विनियम खारेज एवम् संशोधित भई निस्कृय भएकोले तत् अवस्थाको विनियमावली बमोजिमको करारका निवेदकहरूलाई आन्तरिक प्रतियोगिताबाट स्थायी गर्न गर्ने कार्य सम्पन्न हुन नसकेको स्वीकार गरेको लिखित जवाफ समेतबाट देखिन आउँछ।


३६. तेस्रो सवालको सम्बन्धमा हेर्दा, उपरोक्त साबिक विनियमावलीले ४ वर्ष करार सेवा अवधि पूरा गरेका कर्मचारीको जम्मा सेवा अवधि ५ वर्ष पूरा हुन अघि र स्थायी दरबन्दी रहेको



स्थितिमा स्थायी नियुक्ति हुन पाउने कानूनी हकलाई पछि बनेको दोस्रो संशोधन विनियमावली २०७७ ले खारेज एवम् संशोधन गरी निस्कृत गरेको स्थितिमा सो कार्यले निवेदनहरूको हकाधिकारमा हनन भएको र साबिक कानून बमोजिम हक संरक्षण गरी पाउँ भन्ने निवेदकहरूको जिकिर रहेको देखिन्छ। साबिक विनियमावली २०७० को चार वर्ष करारमा सेवारत मेडिकल अधिकृत एवम् कर्मचारीका सम्बन्धमा दोस्रो संशोधन विनियमावली २०७७ को व्यवस्थाले उपरोक्त उल्लेख भए बमोजिम खारेज एवम् संशोधन गरी साबिकको व्यवस्था हटाएको स्पष्ट देखिनुका साथै सो सम्बन्धमा निवेदक र विपक्षी बीच मुख मिलेकै अवस्था देखिन आउँछ। वस्तुतः प्रस्तुत दोस्रो संशोधन विनियमावलीको खारेजी एवम् संशोधनका व्यवस्थाहरू नेपालको संविधान, २०७२ को धारा २४३ को उपधारा (४) को व्यवस्था एवम् सोही संवैधानिक व्यवस्था बमोजिम संगठित संस्थाको कर्मचारीको सेवाका शर्त सम्बन्धि कानून, बढुवा र विभागीय कारवाही सम्बन्धि सामान्य सिद्धान्त, २०७४ को व्यवस्था अनुरूप गराउन खोजेको देखिन्छ। यसै अनुरूप करार सेवाका कर्मचारीलाई मध्य नजर गरी निजामती कर्मचारी अस्पताल करार सेवा कार्यविधि, २०७८ प्रारम्भ भएको र सो कार्यविधिले समेत तत्कालिन विनियमावली, २०७० को प्रावधानहरू हटाएको देखिन्छ। यी विनियमहरू तथा कार्यविधि साबिक विनियमावली २०७० को करारका कर्मचारीलाई अभिनिश्चित गरेका वृत्ति विकासका व्यवस्थाहरू प्रभावित भएको स्थिति देखिन्छ। साबिक कानून बमोजिम प्राप्त सेवा शर्त सुविधालाई पछिल्ला कानूनी व्यवस्थाले प्रभावित पारेको स्थितिमा सर्वोच्च अदालतले विभिन्न मुद्दामा सेवा सम्बन्धी विधिशास्त्रका (Service Jurisprudence) विभिन्न पहलु र आयामको व्यवस्था समेत गरेको पाइन्छ। अच्युत बुढाथोकीसमेत वि. पाटन स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठानसमेत भएको उत्प्रेषण परमादेश रिटमा (ने.का.प. २०७० अंक १० नि.नं. १०५८) अस्पताल प्रतिष्ठानको रूपमा स्थापित प्रतिष्ठानमा नियुक्तिका लागि परीक्षामा सामेल हुने मौका दिनु स्वयममा अनुचित अनुचित वा गैरकानूनी कुरा होइन। यो सामाजिक सुरक्षा र सार्वजनिक हित सम्बन्धी विषय पनि हो भनी व्याख्या भएको पाइन्छ। अधिवक्ता माधवकुमार बस्नेत वि. चिकित्सा विज्ञान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान वीर अस्पतालसमेत भएको उत्प्रेषण परमादेश रिटमा (ने.का.प. २०७१ अंक ८ नि.नं. १२१८) अस्पताल प्रतिष्ठानको रूपमा स्थापना भएपछि अस्पतालमा लामो समय सेवा गरेका कर्मचारीलाई प्रतिष्ठानमा नियुक्तिको लागि

सिमित आन्तरिक प्रतियोगितामा सामेल हुन एक पटक मौका दिनु स्वयममा अनुचित वा गैरकानूनी कुरा नहुने भन्ने व्यवस्था भएको पाइन्छ। यस्तै प्रकारले केशवबहादुर थापा क्षेत्रीसमेत वि. नेपाल सरकार प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालयसमेत भएको उत्प्रेषणयुक्त परमादेशको रिटमा (ने.का.प. २०६६ अंक ५ नि.नं. ८१५३) सेवा उप्रान्त पश्चातदर्शी किसिमले असर पर्ने गरी अघि नै हासिल भैसकेको लाभ वा सुविधाको कटौती गर्न दिनुले सेवामा रहेका कर्मचारीले आफ्नो विश्वासमा धोखाको अनुभव गर्ने अवस्था खडा हुन्छ भने त्यस्तो निर्णय गर्नेहरू पनि गैर जिम्मेवार ढंगले अरुलाई प्रभावित गर्न दुरुत्साह हुन सक्ने स्थिति उत्पन्न हुन सक्ने भनी उल्लेख भएको पाइन्छ। एवम् प्रकारले नमराज अधिकारीसमेत विरुद्ध संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उडडयन मन्त्रालयसमेत भएको परमादेश समेतको रिटमा (०७८-WO-०३३५) उमेर हद नलाग्ने गरी सिमित प्रयोगिताद्वारा पदपूर्ति गर्न गराउन परमादेशले आदेश जारी भएको देखिन्छ। उपरोक्त सर्वोच्च अदालतको व्याख्याहरू हेर्दा कर्मचारी सेवा शर्त सुविधाका विषयहरूलाई सामान्य कानूनका रूपमा मात्र नहेरी न्यायपूर्ण औचित्यता एवम् कर्मचारीको वृत्ति विकास एवम् प्रोत्साहन लगायतका पक्षहरू समेतलाई सन्निहित गरी व्याख्या गर्नुपर्ने मार्ग निर्देश गरेको देखिन्छ।

३७. एवम् प्रकारले वैधानिक अपेक्षाको सिद्धान्त (Legitimate expectation) को सिद्धान्तलाई सर्वोच्च अदालतले सुरेन्द्रबहादुर विष्ट वि. नेपाल सरकार समेतको उत्प्रेषण परमादेश रिटमा (ने.का.प. २०७४ अंक ७ नि.नं. ९८३८) व्याख्या गर्दै सो सिद्धान्तलाई न्याय सम्पादनको मार्ग दर्शनको रूपमा स्थापित गरेको देखिन आउँछ। वैधानिक अपेक्षाको सिद्धान्तको विविध पहलु र आयामलाई मुखरित गर्दै डा. जेनुद्धिन अन्सारी वि. त्रिभूवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुरसमेत भएको परमादेशको रिटमा (ने.का.प. २०७१ अंक १० नि.नं. ९२६०) वैध अपेक्षाको सिद्धान्तको सिद्धान्त सामान्यतयः सार्वजनिक निकाय वा पदाधिकारीले प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपबाट कुनै काम गर्ने वा नगर्ने बचनबद्धता वा आश्वासन लिखित वा मौखिक रूपमा व्यक्त गरेको स्थितिमा त्यस्तो आश्वासन वा बचनबद्धता प्रति सार्वजनिक पदाधिकारी वा निकाय प्रतिवद्ध रहनेछ भन्ने कुरामा सम्बन्धित पक्ष विश्वस्त भई कार्य संचालन वा सम्पादन हुनुपर्दछ भन्ने मान्यतालाई खम्बिर गरेको पाइन्छ।



३८. सर्वोच्च अदालतका विभिन्न मुद्दामा प्रतिपादित सिद्धान्त एवम् व्याख्याहरूले निर्देश गरे जस्तै निवेदकहरू सार्वजनिक प्रतिष्ठानमा कार्यरत कर्मचारी भएको तथा प्रचलित ऐन कानून बमोजिम गठन आदेश बमोजिम निजामती कर्मचारी अस्पताल जस्तो संस्था गठन भएको देखिन्छ। माथि उल्लेख गरिए बमोजिम चार वर्ष सेवा गरेका करार सेवामा कार्यरत कर्मचारी एवम् चिकित्सकलाई स्थायी पद भएका त्यस्ता स्थायी पदपूर्तिका लागि सार्वजनिक निकायले विशेष कार्यविधि अवलम्बन गर्ने आश्वासन र प्रतिबद्धता विनियमावलीका व्यवस्था बमोजिम गरेको देखिन्छ। सो व्यवस्थाहरूको परिपालना हुन्छ भन्ने विश्वासका साथ नै सम्बन्धित कर्मचारीहरू सेवारत रहेको मान्नुपर्ने हुन्छ जुन वस्तुतः त्यस्ता व्यक्तिहरूको लागि वैधानिक अपेक्षा (Legitimate Expectation) समेत रहे भएको मान्नुपर्ने देखिन आउँछ। सो विनियमावली बमोजिम वैधानिक अपेक्षाको योग्यता कायम रहेका कर्मचारीको कानूनी आश्रयताको वरिष्ठता हुने गरीपछि अर्थात् २०७७ सालको दोस्रो संशोधन विनियमावलीले दखल वा प्रतिकूल प्रभाव पार्न सक्ने अवस्था रहन्न। यस्तै प्रकारको तत् अवस्थाको वैधानिक अपेक्षा राख्ने योग्यता पुगेका कर्मचारीहरूका हकमा साविकको विनियमावली, २०७० का सेवा शर्त सुविधा उपभोग गर्न पाउने वैधानिक हक रहे भएकै अवस्थामा सो विनियमावलीको दोस्रो संशोधन, २०७७ का विनियममा भएको संशोधन एवम् विनियम ३१ को खारेजी एवम् निजामती अस्पताल करार सेवा कार्यविधि, २०७८ निवेदकहरूलाई असर पारेको देखिएकोले सो विनियमावलीको दोस्रो संशोधन २०७७ समेत निज योग्य रिट निवेदकहरूका हकमा पश्चातदर्शी असर (Retrospective Effect) राख्ने व्यवस्थाको रूपमा समेत रहे भएको देखिन आउँछ। कर्मचारीहरूको सेवा विधिशास्त्र (Service Jurisprudence) बमोजिम कर्मचारीले खाईपाई आएको तलब भत्ता सुविधामा अनायस कटौती हुने गरी प्रतिकूल कानून बान्छनीय परिधिभित्र नपर्ने सामान्य सिद्धान्त समेत रहेको पाइन्छ।

३९. यसरी निजामती कर्मचारी अस्पताल विकास समिति गठन (आदेश) २०६४ बमोजिम स्थापित संगठित संस्थाको रूपमा रहे भएको र सो विकास समितिले जारी गरेको तत्काल प्रचलित निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाका शर्त र सुविधा) विनियमावली, २०७० कानून व्यवस्था सम्बन्धी ऐन, २०१० को दफा २ को खण्ड (ड) बमोजिम कानून भएको एवम् सो विनियमावलीको व्यवस्थाहरू परिपालना गर्नु गराउनु निजामती कर्मचारी अस्पतालको

~~१३/१०~~

काम कर्तव्य अधिकार देखिन्छ। सो विनियमावलीले बन्दोबस्त गरेका सेवा शर्त सुविधाको उपभोग गर्न पाउने वैधानिक अधिकार निवेदकहरूमा रहेको देखिन्छ। साथै सर्वोच्च अदालतबाट माथि उल्लेखित कर्मचारीहरूको सेवा विधिशास्त्र सम्बद्ध विभिन्न व्याख्याहरूबाट पनि पूर्ववत कानूनले प्रदान गरेका सुविधा एम् अवसरहरू पछिल्ला कानूनले निषेध र निस्कृय गर्न नसक्ने अवस्थाको देखिन आउँछ। यस्तो स्थितिमा प्रचलित कानूनी व्यवस्था बमोजिम योग्यता पुरा भएका करारमा नियुक्त निवेदकहरूले तत्काल प्रचलित कानूनी रोह रितबाट खाली रहेका स्थायी पदमा प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाको माध्यमबाट स्थायी नियुक्त हुन सक्ने नै देखिन आउँछ। निवेदकहरूले रिट निवेदनमा विपक्षीहरूको यो यस मितिको यो यस निर्णय भनी एकिन उल्लेख गरी बदर गर्न उत्प्रेषणको माग गरेको देखिँदैन।

४०। तसर्थ तत्काल प्रचलित निजामती कर्मचारी अस्पताल (कर्मचारीहरूको सेवाका शर्त र सुविधा) विनियमावली, २०७० बमोजिम लोक सेवा आयोगको परामर्श लिनुपर्ने भएमा सो समेत लिई चार वर्ष सेवा अवधि पुगेका चिकित्सक एवम् कर्मचारीहरूमध्ये प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाको माध्यमबाट स्थायी दरबन्दीका पदमा स्थायी नियुक्ति गर्नु गराउनु भनी विपक्षीहरूका नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ठहर्छ। प्रस्तुत आदेशको जानकारी महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय मार्फत विपक्षीहरूलाई दिई आदेश विद्युतीय प्रणालीमा प्रविष्ट गरी निवेदनको दायरीको लगत कट्टा गरी मिसिल नियमानुसार गरी अभिलेख शाखामा बुझाई दिनु।

~~१३/१०~~
(डा. कुमार चुडाल)
न्यायाधीश

उक्त रायमा म सहमत छु।

१३/१०/१९
(दीपक कुमार कार्की)
का.मु. प्रधान न्यायाधीश

इजलाश अधिकृत :- डिल्लीराम प्रसाई

कम्प्यूटर टाईप गर्ने :- विकेश गुरागाई

इति सम्बत् २०७९ साल जेष्ठ ३१ गते रोज ३ शुभम्..... ।